

३५
श्रीकृष्णमालाजी

(संस्कृत-सहित)

१५

प्रकाशक :

श्री किशोरी शरण मुखिया

श्री विश्वेश्वर कृपा कुंज

राजपुर बाँगर, परिक्रमा मार्ग, वृन्दावन (मथुरा)

मो. नं. 9758698082

प्रथम संस्करण :

भादों शु. अष्टमी (श्रीस्वामी अष्टमी) सं. 2071

दि. 2-9-14

आवृत्ति : 1000 प्रति

कभी हुआ, न होगा, न हो सकता है। इसका विलास क्या है, मानो रुचि के प्रकाश परस्पर खेल रहे हों, राग-रागिनियों के निर्झर मानो सर्वत्र झर-झर करके प्रवाहित हो रहे हों, यह प्रेम की जोड़ी है, प्रेम के महासागर में क्रीड़ा करती रहती है, प्रेम के अतिरिक्त वहाँ और कोई विकार कभी नहीं है।

दोनों की प्रेम-क्रीड़ाएँ अबाध गति से निरन्तर चलती रहती हैं। वे एक पल के लिए भी एक दूसरे की दृष्टि से ओझल होना जानते ही नहीं। दोनों एक दूसरे की आँखों की ज्योति हैं, दोनों एक दूसरे के वचनामृतों का पान करके जीते हैं, दोनों एक दूसरे के रूप-रस को पीते हैं, निरन्तर पान करते हुए भी दोनों के दोनों रीते हैं।

आचार्यों ने इस अद्भुत जोड़ी के रस-विलास को 'नित्यविहार' कहा है। नित्यविहार इसलिए कि यह नित्य जोड़ी का विहार है, अनित्य का नहीं, और इसलिए भी कि यह नित्य (सतत चलने वाला) विहार है और इसलिये भी कि यह नित्य वृन्दावन में होने वाला विहार है और इसलिए भी कि यह नित्य (प्रेम) का विहार है, अनित्य (काम) का नहीं। नित्य वृन्दावन में, नित्य प्रेम स्वरूपिणी श्रीहरिदासी के निर्देशन में, नित्य जोड़ी का नित्य निरन्तर चलने वाला यह नित्य विहार ही इस केलिमाल का वर्ण्य है, गेय है। यह नित्यविहार-रस ही श्यामा-श्याम का काम्य है, यही दोनों का जीवन-प्राण है, यही दोनों का

आहार-विश्राम है। आसक्ति और अनुराग भी यही है, होली और फाग भी यही है, फूलडोल भी यही है, तीज-हिंडोरा भी यही है। प्रियालाल की अद्भुत रूप माधुरी, आमोद-आह्लाद, गीत-संगीत बनाव-शृङ्गार, सुकुमार भावनाओं की सरस अभिव्यक्ति एवं ऐश्वर्य विहीन अलौकिक प्रेम की रसिक-हृदय-संवेद्य अनंत-अनंत सौंदर्यमयी लीलाएँ- सब नित्यविहार के अन्तर्गत आती हैं। मान-मनुहार, विकलता-बेचैनी शुक-शावकों का कलरव, कोकिला का आलाप विहंगवृन्द का स्वर भरना, मोरों का नृत्य, मेघों का मृदंग-वादन, वर्षा की रिमझिम, नृत्य, गीत और ताल, जवादि-कर्पूर की महक और कस्तूरी-कुमकुम के रंग-

सबके सब नित्यविहार के ही अङ्ग हैं। कहीं विपरीत रति से इस नित्यविहार की अभिव्यक्ति हुई है, कहीं सुरतान्त छवि से इसे इंगित किया गया है, कहीं वेष-विपर्यय से यह ध्वनित हुआ है, तो कहीं 'चनख-चनख' बोलन से इसकी प्रतीति करा दी गई है।

यह रसों का सार है, अमृत रस का परिपाक है। यह अनुभव का विषय है, व्याख्यान का नहीं। यह गहरे में डूबकर समाधिस्थ हो जाने की साधना है, ढिंढोरा पीटकर अलख जगाने की नहीं; यह पति के साथ दहकती चिता पर चढ़ने वाली सती की मुस्कान है, वारमुखी के रूप का अभिमान नहीं।

यही नित्यविहार हरिदासी संप्रदायानुवर्ती रसिक संतों का एकमात्र आस्वाद्य रस है। लोक-परलोक के सुख, मुक्ति की लालसा, वैकुण्ठ की कामना इन्हें नित्यविहार के समक्ष निस्सार प्रतीत होती है। इसके रस का आस्वाद लेने वाले किसी महानुभाव ने ठीक ही कहा है-

महामिहीं रस के फल फलित भये कल्पद्रुम,
ऐसे श्रीस्वामी हरिदासजू के पद हैं।
जामें न बकुल-बीज लीला औ महातम के,
वर विहार माधुरी के सार कौ जो सद हैं।।
दम्पति आसक्तताई प्रगटि करत छिन-छिन प्रति,
नव रस सिंगार आदि कीने सब रद हैं।
पीवै रसिक सोई, जाकौ न सुहात और,
दम्पति बस करिबै कौ मादिक बेहद हैं।।

श्रीस्वामीजी के पद मानो किसी अचिन्त्य कल्पवृक्ष के महामधुर-रस से भरपूर फल हैं। लीला-माहात्म्य के छिलके और बीज तक नहीं हैं, ये तो बस बिहार-रस-माधुरी के सदन हैं। ये पद पदे-पदे श्रीयुगल की पारस्परिक आसक्ति को प्रकट करने वाले हैं। इन्होंने शृङ्गार आदि नौ रसों को निरस्त (रद्द) कर दिया है। जिस रसिक ने एकबार भी इनका आस्वादन कर लिया, उसे फिर अन्य कुछ भी नहीं सुहाता।

श्रीयुगल को स्नेह के वशीभूत करने की तो इनमें बेहद क्षमता है।

प्रेम-स्वरूप श्रीस्वामीजी से प्रार्थना है कि वे नित्य-पाठ करने वाले सभी महानुभावों को

श्रीश्यामा-कुञ्जविहारी के नित्य-विहार का अवलोकन करने में समर्थ रस-दृष्टि प्रदान करने की कृपा करें।

-विश्वेश्वरदास

राज रस

सकल रसन कौ राज रस या बिन न हियो सिराय

श्रीस्वामी हरिदास जी महाराज कौ रस समस्त रसन कौ राजा स्वरूप है और जितने भी रस जो रसिकाचार्यन ने प्रगट किये हैं वे प्रजावत हैं। श्रीश्यामा कुंजविहारी दोऊ रस की ही साक्षात मूरति हैं। इनके तन मन में केवल यही रस भर्यो भयो है, और काहू बात की कहा कही जावै अन्य

काहू रस की हू समाई नाँय है। रात और दिन याही रस कौ आस्वादन करत रहत हैं। एक छिन हूं या रस बिन नाँय रह सकत है। याही रस ते इनके प्रानन कौ पोषण होवत रहत है। जैसे जल के बिना जल जन्तु नाँय रह सकत, ऐसैं या रस के बिना इनकौ जीवन ही नाँय है।

रस की मूरति जुगल वर, रस विलसैं दिन रैन।
गौर श्याम रसखान के और न उपजत ऐन॥

एकमात्र नित्यविहार रस कौ ही महल में साम्राज्य है। नित्य निरन्तर अबाध गति ते, निरबधि निपट एक सेज विहार ही अनादि काल ते चलतौ आय रह्यो है, अबहू चल रह्यो है और आगे हू चलतौ ही रहैगो, कबहू भी बन्द होयवे वारौ नाँय है।

प्रियालाल ने या रस कूँ छोड़िकें एक हू
 ग्रास भोजन कौ नाँय लियो, एक बूँद पानी की
 नाँय पी, एक पलक भी सोये नाँय है। हर समय
 सम वयस अवस्था विद्यमान रहै है। वाही रस कूँ
 श्रीस्वामीजी महाराज ने पदन के द्वारा वर्णन कर्यो
 है। यह नित्य विहार रस श्रीश्यामा कुंजबिहारी की
 नित्य केलि है। ऐसे सरस मनियाँ स्वरूप पदन कूँ
 अनुराग के धागा में पिरोय कें “श्रीकेलिमाला”
 बनाय कें अपने निज आश्रित रसिक जनन कूँ
 धन्य धन्य कर दियो।

जा रस की एक बूँद के ताँई रसिक
 समाज तरस रह्यो, बाँछा कर रह्यो हो। आपने
 कृपा करके वा रस कौ सागर ही धराधाम पै

लायकेँ बहाय दियो, अनन्य रसिक समाज मत्र
 भायो पायकेँ फूलि उठयो। ऐसी वस्तु कौ या
 घोर कलिकाल में प्रगट देखिकें आश्चर्य हू
 आश्चर्य में डूबि गयो। या घृणित और निन्दनीय
 कलियुग कूँ अति बडभागी और बन्दनीय बनाय
 दियो।

जो केलिमाल के सिद्धान्त और रसपरक
 भावन कूँ समझकेँ धारण और आस्वादन करैगो,
 वाकूँ कलिजुग की पवन सपरस नाँय करि सकैगी।
 कलिजुग में रहते भये हू वाके प्रभाव ते प्रभावित
 नाँय होयगो। जो वस्तु अगम निगम ते दूर ही,
 श्रीनारद, सनकादिकन ते हू छिपी भई ही, और
 श्रीलक्ष्मीपति तथा श्रीबृजपति हू या रस के ताँई

लालायित हैं, वो रस श्रीस्वामीजी महाराज ने कृपा करके प्रगट कर दियो।

जब साधारण रस श्रीजयदेव जी महाराज की "गीत गोविन्द" की पंक्तिन कूँ गामती भयी माली की लड़की पै ठाकुर श्रीजगन्नाथजी महाराज ऐसे रीझ गये जो विवश होयकें बैंगन के खेत में सुनते भये वाके पीछे पीछे डोलते रहे। बैंगन के काँटेन ते तन छिद गयो, वस्त्र फट गये फिर हूँ सुनते ही रहे। वा रस की मादकता और गायक के अनुराग ने ठाकुर के हृदय कूँ आनन्द के समुद्र में डुबाय दियो। तो या सिरमौर, राजरस तथा अनन्य मुकुट मनि रस कूँ अपने अनन्य प्रेमी, भावुक अनुरागी मर्मज्ञ रसिक द्वारा श्रवण करि, प्रीयालाल

कूँ कितनी प्रफुल्लता, प्रसन्नता, मादकता, विवशता, महाआनन्द तथा प्रानन की तुष्टि पुष्टि होयगी, याकौ अनुमान कौन लगाय सकैगो। जो या रस कूँ गावैगो वाके बडभागन कूँ कौन बखान कर सकैगो।

कहत सुनत सेवत जे

यह सुख ते धनि कौतिक हार।

श्रीबिहारीदास जे

यह मत गावत तिनकौ वार न पार।।

जो बडभागी अनुरागी या रस कौ सेवन करै है वो बडभागीन में शिरमौर है, वो प्रीयालाल के कंठ कौ हार है। श्रीस्वामीजी महाराज तथा प्रीयालाल रीझिकें अपनौ सर्वस ही न्यौछावर कर

देते हैं। अपने प्रानन ते प्यारी अपनी निज सखी
✓ बनाय कैं, अपने ही पास में राख लेवें हैं और
कुंजमहल के राज कौ अधिकारी बनाय देवे हैं।

प्रीयालाल सदाँ सदाँ के ताँई या रस के
ऐसे आधीन होय गये हैं, या रस के बिना एक
छिनक हूँ, पलभर हूँ नाँय रहि सकत हूँ।

नखसिख रसिक सुरस भर्यो

मो प्रान प्रिया के रंग।

मो बिन नेंकु न रहि सकैं

विहरत अनुराग अभंग।।

श्री कुंजबिहारिनि लाडिली जू अपने प्रान
प्यारे श्री कुंजबिहारी लाल की रस-विवशता कूँ
अपनी प्रान सहेली श्री बिहारिनिदासी जू कूँ भाव

विभोर होयकें बताय रही हैं। मेरो प्रीतम बिहारीलाल
कौ नख ते सिखा लौं सम्पूर्ण तन, रस ते भर्यो
भयो है, ऐसौ विचित्र रसिक है। हर समय मेरे ही
रंग में रँग्यो रहै है और प्रेम की तौ साक्षात मूर्ति है
और हर समय अनुराग छायो रहै है-

“ये दोउ निमिष ना बीछुरें इनहि प्रेम कौ नेम”।

अर्थात्, पल छिन भर हू मेरे बिना नाँय रहि सकत
हैं। प्रेम के समुद्र में हर समय डूबे ही रहे हैं।

अवधि प्रेम की साँवरौ मिलि करत नई नित केलि।

या रस ते नेंकु न टरें हम दोऊ नवल नवेलि।।

श्री स्वामिनी जू फिर लालजू के गुनन कूँ
अपनी प्यारी सहेली ते वर्णन कर रही हैं। श्रीबिहारी
जी महाराज प्रेम की तो रेखा स्वरूप हैं, अर्थात्

इनते बढकें अन्य कोई प्रेमी नाँय है और निशिदिन मेरे मन ते अपनौ मन मिलाय कें नित्य निरन्तर नई नई केलि करत रहत हैं। और हम दोउ नव जोवन जोर नवल किशोर किशोरी या रस ते पलभर के ताँई हू अलग नाँय होवे हैं। यह रस ही हमारौ जीवन है। हमारौ विहार ही आहार है।

श्रीबिहारी जी महाराज ऐसैं रसीले और रँगीले हैं जो मेरे ही रंग में रँगे भये रहत हैं। मेरे बिना इनकूँ कल नाँय परै है। मेरौ रूप इनकी आँखिन में भर्यो रहत है। अपनी आँखिन कौ गहनौ बनाय कें मोकूँ राखत हैं। और मेरे ही रूप के रंग में इनकी आँखियाँ रँगी रहत हैं। हर समय रूप माधुरी कौ पान करत रहत है, और पान

करते-करते कबहूँ अघावें ही नाँय हैं। पलक की ओट होते ही आकुल व्याकुल तथा बेचैन ह्वे जाँय हैं। बासे पक्षी की सी दृष्टि लगाये रहत हैं।

श्री कुंजबिहारिनि लाडिली जू भी ऐसी ही हैं, जो लालजू कूँ मनभायो रस पिवाय पिवाय कें जिवाय कें निहाल करती रहैं हैं। प्रानन कौ तोषण पोषण करती रहैं हैं।

श्री कुंजबिहारिनी लाडिली परम उदार कृपाल।
तोषत पोषत लाल कूँ रसिक शिरोमनि बाल ॥
प्यारी जू के चित में अपने प्रिय प्रीतम कौ ही हित भर्यो भयो रहत है। अपनी मधुर बोलनि, हँसन, मुसिक्यान, नैनन के नैनन सों मिलन, सरस बतरान, हुलास और नई नई उमंग तथा उदारता कृपालुता ते

अपने प्यारे प्रीतम कूँ नवनवायमान रस कौ पान करावत रहत हैं।

“प्यारी प्रीतम कौ हित चित धरें हुलसति हँसत उदार” रसिक शिरोमनि श्री प्रियाजू अपने प्रीतम कूँ उनकी भावना और मनोरथन के अनुसार सुख पहुँचाती रहें हैं, श्री लालजू जाँचक हैं प्रियाजू दाता हैं।

रसिक शिरोमनि लाडिली

लडिक्यात पिया रति भाव।

मनोज चोज विनती करें,

अंग भरन चित चाव।।

प्रियाजू सदाँ लाल पै रीझि रीझि कें कृपा की बरसा करत रहत हैं और उनके मनोज चोज के

समस्त मनोरथन कूँ पूर्ण करकें छिन छिन में निहाल करत रहत हैं। या रस में मान, बिरह बिछुरन आदि की तनक सी भी अर्थात् सूक्ष्म रूप में हू समाई नाँय है। निशिदिन याही रस कौ ही आवेश व नशा चढ्यो रहै है और काहू बात की सुधि हू नाँय करें हैं। ऐसे अगाध रस कूँ जैसो श्रीस्वामीजी महाराज ने अपनी आँखिन ते अवलोकन कियो, तैसो ही ज्यों की त्यों अपने पदन में वर्णन कस्यो है। उन पदन कूँ अनुराग के धागा में पिरोय कें माला बनाय दई है। ताही को केलि माला या “श्री केलिमाल” जी के स्वरूप में निर्मित कर दियो। ऐसी अद्भुत सरस उदारता भरी अहैतुकी कृपा की बार-बार बलिहारी जाँय हैं।

यह रस रसिकन कियो है निदान।
यह रस सनहु तजि अभिमान॥
अभिमान तज भज सुनहु प्रानी जनम जनम के श्रम मिटै।
प्रगट ललिता रूप श्रीहरिदास निज नामहि रटै॥

जो साधक या केलिमाल कौ निष्ठापूर्वक पाठ करें हैं उनकी सौभाग्यता कौ वर्णन नाँय कियो जाय सकत है। जाके घर में श्री केलिमाल जी विराजमान हैं और सम्मान व श्रद्धापूर्वक सेवन तथा पूजन आदि होय है वो घर भी धन्य है।

अवतार धारण करने वाले भगवत स्वरूप निमित्त लीला वपु माने जाते हैं। श्रीकृष्ण चन्द जू का निमित्त स्वरूप हैं। अनेक निमित्तों को पूर्ण करने के लिये अवतरित होते हैं। ब्रज में प्रगट होते

हैं। नन्दभवन में अनेक बाल लीला करते हैं। बाल्यावस्था तथा पौगण्य अवस्था आदि का उपभोग करते हैं। वात्सल्य, सख्य तथा माधुर्य आदि कई रसों का आस्वादन करते हैं। सब निमित्तों को पूर्ण कर अन्तर्हित हो जाते हैं।

श्री बिहारी जी महाराज का नित्य स्वरूप है। नित्य निकुंज महल में सदैव विराजमान रहते हैं। श्री कुंजबिहारिनि लाडिली जू रंग में रंग बढ़ाकर अति हुलास भरी नये नये लाड लडावत रहत हैं। स्यामा-कुँजबिहारी तथा सखी, सहचरियों की नित्य किशोर अवस्था रहती है, अन्य अवस्थाओं का प्रवेश नहीं है। केवल एक ही नित्य केलि रस का आस्वादन करते रहते हैं। कहीं भी आने-जाने

की रीति नहीं है। एक सेज की केलि की ही प्रीति है।

श्रीबिहारिनि बल्लभ दुर्लभ भये
सुल्लभ श्री हरिदास किये।

धनि धनि अनन्य जननि भजें
जिन प्रेम के नेम लडाय लिये ॥

रस रीति सों प्रीति प्रतीति नहीं
कहा निरखें हरषें न हिये।

बाँके विरद बुलाइ न्याइ
निगम अगम न जात छिये ॥

श्री बिहारिनदेव जू महाराज का कथन है,
कि श्री कुंजबिहारिनि श्यामा प्यारी जू के प्रान
लाडिले श्री बाँकेबिहारी जी महाराज सबसे दूर,

नव निकुंज मन्दिर में सन्तत विराजमान थे और हैं। वहाँ तक किसी की भी दृष्टि नहीं पहुँच पा रही थी। सबके लिये दुर्लभ अथवा अगम्य थे। पंच ऋषियों की कठिन तथा घनघोर और दीर्घ-कालीन तपस्या व उनकी मनवांछित नित्यविहार प्राप्ति की भावना से, श्री स्वामी जी महाराज धराधाम पर प्रगट भये। उन पंच ऋषियों ने जपना, भगना, भीला, गंगाधर तथा गुरुजन के नाम से जन्म लिया। श्री स्वामी जी महाराज ने श्री बाँकेबिहारी जी को श्री निधिवन कुंज में विग्रह रूप में प्रगट किया और ऋषियों को नित्यविहार देकर उनकी मनोकामना पूर्ण की। “निज मत सिद्धान्त” नामक वाणी में इसका विवरण विस्तार

रूप से वर्णित है। पंच ऋषियों की ही कृपा से आज हम सबको श्री बिहारी जी महाराज, जो दुर्लभ से भी दुर्लभ थे, वे सहज में सुलभ हो रहे हैं। श्री बिहारी जी महाराज वेद-रीति, विधि-निषेध सों बहुत ही दूर हैं, वे प्रेम के अवतार हैं, प्रेम के ही भूखे हैं। जो बडभागी महानुभाव उनको प्रेम सों ही लाड लडावत हैं, उनका जीवन धन्य धन्य है। अनन्यता पूर्वक जो प्रेम सों उनको लाड लडावत हैं उनके बडभाग की सराहना कहाँ तक की जाय। बिहारीजी महाराज तो रीझि कर, उनके गले का हार बन जाते हैं।

श्री बिहारी जी महाराज तो रस रीति के ही एकमात्र रसिक हैं, रसरीति ही उनका प्राण जीवन

है। रसरीति के बिना जो उनकी सेवा, पूजा, दरसन, आराधना आदि करते हैं, उनका हृदय सुख शान्ति पूर्वक हर्षित नहीं होता है, और न श्री बिहारी जी महाराज उनकी सेवा से हर्षित होते हैं। न्याय, अर्थात् निर्णय की बात तो यह है, कि श्री बिहारी जी तो बाँके नाम से विख्यात हैं। उनका नाम, रूप, लीला, सुयश, निकुंज, प्रियाजी तथा सखी-सहचरि सब कुछ बाँकी ही है। निगम आगम, अर्थात् वेद पुराण उनका स्पर्श नहीं कर सके। वेद पुराणों में उनकी चर्चा कहीं नहीं है। वेद पुराणों ने निर्गुण, सगुण भगवत स्वरूपों का वर्णन किया है। श्री बिहारी जी महाराज का स्वरूप तो निर्गुण सगुण से आगे का स्वरूप है।

श्री कुंजबिहारी लाल को, जानै बिरला कोय ।
सोई उनको जानि सकै, जो श्री स्वामी कौ होय ॥
जो मन क्रम बचन सों श्री स्वामी जी का अनन्य
होगा, वही श्री बिहारी जी महाराज के स्वरूप कौ
जान सकेगा । श्री स्वामी जी की कृपा के बिना
सबही कौ अगम्य है ।

याही ते दुर्लभता सबको लक्ष्मीपति ललिचात ।
श्री स्वामी जी की शरण ग्रहण किये बिना और
उनकी कृपा के बिना, श्री भगवान वैकुण्ठाधिपति
विष्णु जी को भी दुर्लभ है । वे आधिपत्य प्राप्त
कर विश्व का संचालन, भरण पोषण, धर्म का
संरक्षण, भक्तों का योग क्षेम आदि अनेक
लीलाओं की रचना करते रहते हैं । वहाँ ऐश्वर्य

की प्रधानता है । ऐश्वर्य लीलाओं में प्रेम नहीं बन
पाता है ।

श्री स्वामी हरिदास जी महाराज प्रेम, रस,
सुख, शोभा, कृपा, हित, दया, मया आदि के
महासागर हैं । प्रीयालाल के नित्यविहार के स्वरूप
हैं, लाड, दुलार सुख के समूह हैं । जगत के दुखी
जीवों के दुख को देखकर उनको नित्य सुख से
सुखी करने के लिये ही संवत् 1537 भादों शुक्ला
अष्टमी, दिन बुधवार को मध्याह्न के समय ब्राह्मण
कुल में, श्री वृन्दावन के निकट राजपुर गाँव में
प्रगट भये । आपकी माता का नाम श्री चित्रा जी
तथा पिताजी का नाम श्री गंगाधर जी था । आपने
श्री निम्बार्क सम्प्रदाय में स्थित श्री आशुधीर देव

जू, जो श्री गोवर्धन पर्वत के अवतार माने जाते हैं, से दीक्षा, मन्त्र तथा विरक्त भेष ग्रहण कर शिष्यता प्राप्त की "गुरुन कौ गुरु श्री हरिदास आशुधीर कौ"। पच्चीस वर्ष की अवस्था में आप अविवाहित ही गृह त्यागकर श्री वृन्दावन में नित्य निवास कर, श्री बिहारी-बिहारिनि कूं लाड लडाने में तल्लीन हो गये; सत्तर वर्ष वृन्दावन में वास किया। 95 वर्ष की आयु में आप निकुंज महल को गमन कर गये। आपके बारह विरक्त शिष्य थे (1) श्री बीठलविपुल जी, (2) श्री दयालदास जी, (3) श्री मनोहर दास जी, (4) श्री मधुकर दास जी, (5) श्री मधुरदास जी, (6) श्री गोविन्ददास जी, (7) श्री केशवदास जी, (8) श्री मोहनदास जी,

(9) श्री बलदाऊ दास जी, (10) श्री अनन्य दास जी, (11) श्री द्वितीय दयाल दास जी, (12) श्री प्रकाश दास जी। श्री स्वामी हरिदास जू महाराज श्यामा-कुंजबिहारी की नित्य लीलाओं का नित्य-निरन्तर अवलोकन किया करते थे और उन्हीं का गायन किया करते। उन पदों को संकलित कर, श्री केलिमाल जी की रचना भई है, जिसमें प्रियालाल का पूर्ण प्रेम प्रकाश, केलि विलास, रूप रंग रस की गहराई आदि का वर्णन है। एक-एक शब्द पर सकल मंत्र न्योछावर हैं। रस रीति को समझकर अनन्य भाव से निष्ठापूर्वक श्री केलिमाल जी का नित्य पाठ करने वाला साधक श्री स्वामी जी महाराज की कृपा प्राप्त करने का अधिकारी

बन जाता है। अतः सभी निजजनों से नम्र निवेदन है, निष्काम भाव से, प्रेम पूर्वक श्री केलिमाल जी का नित्य नियम से पाठ करने की चेष्टा करें। श्री केलिमाल जी की महिमा अगाध है।

यह श्री स्वामी जी महाराज के मुखारविन्द से स्पर्श हुआ कृपा प्रसाद है।

जै जै श्री कृपा रसिकवर की।

जै जै हितरासी हितकर की।।

॥ जय जय श्रीहरिदास ॥

रसिक कृपाश्रित :

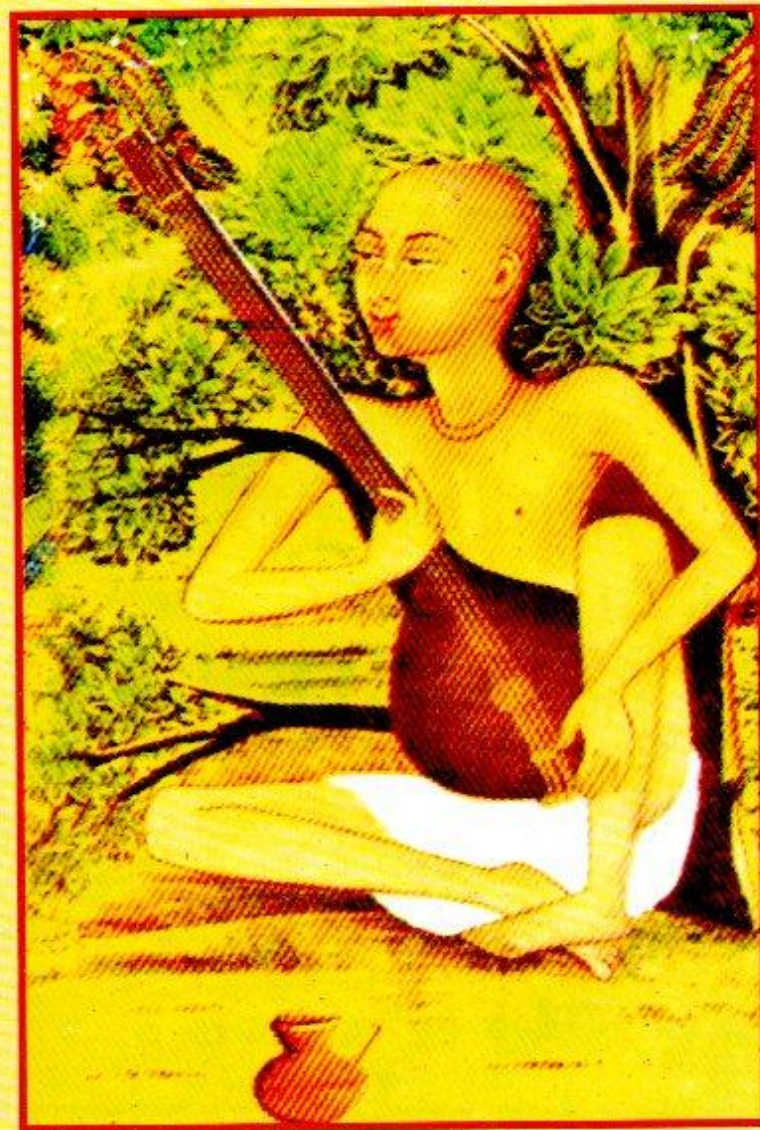
जमुनादास

नवलकुंज, वृन्दावन

✽



स्वामी श्री हरिदास जी के लाडले ठाकुर श्री बाँके बिहारी जी महाराज



रसिक अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास जी महाराज

॥ श्रीमत्कुञ्जविहारिणे नमः ॥

॥ श्रीस्वामी हरिदासो विजयतेतराम् ॥

मंगलाचरण

प्रथम लड़ाऊँ श्रीगुरु,
बंदन करि श्रीहरिदास।
विपुल प्रेम निजु नेम गहि,
कहि सुजस बिहारिनदास ॥१॥
गुरु सेवत गोविंद मिल्यौ,
गुरु गोविंदै आहि।
श्रीबिहारीदास हरिदास कौ,
जीवत है मुख चाहि ॥२॥

-स्वा० श्रीविहारिनदेवजी

स्वा० श्रीकृष्णदासजी कृत-

बड़ौ गुरु-मंगल

(1)

राग-सूहौ बिलावल

ताल-रूपक

प्रथम जथामति श्रीगुरु-चरन लड़ाइहैं।
उदित मुदित अनुराग प्रेमगुन गाइहैं॥
गौर-स्याम सुखरासि तिन्हें दुलराइहैं।
देहु सुमति बलि जाउँ आनंद बढ़ाइहैं॥
आनंद-सिंधु बढ़ाइ छिन-छिन प्रेम-प्रसादहिं पाइहैं।
जै श्रीवरबिहारिनदासि कृपा तें हरषि मंगल गाइहैं॥

2

(2)

जै जै श्रीहरिदास रसिक-कुल-मंडना।
अनन्य नृपति श्रीस्वामी सकल भै-खंडना॥
रसिक-कमल-कुल-भानु सु प्रगट उदौ कियौ।
भ्रम तम श्रम सब नासि, सबनि कौं सुख दियौ॥
दै सबनि सुख अति कृपा करि, प्रगट बिहार सुनाइयौ।
जै जै श्रीहरिदास रसिक-मन भाइयौ॥

(3)

जानि बिहार गुपत अति भूतल प्रगट कियौ।
कीरति जग विस्तारि सु रस रसिकनि दियौ॥
निरनै करि जस गाइ सु परहित वपु धर्यौ।
धनि-धनि कहैं सब रसिक अनन्य सुवर वर्यौ॥

3

वर वर्यौ धनि धन्य कहि-कहि, छिन-छिन प्रति दुलरावहीं।
जै जै श्रीहरिदास, वाँछित फल पावहीं॥

(4)

कामकेलि-माधुर्य सहज रति सर्वदा।
प्रेम सुभाउ सरल मति सुधा गुन निर्मदा॥
विश्व सकल सुख देखि छिया करि छाँड़ियौ।
दंपति पति अभिराम अपनौपन माँड़ियौ॥
माँड़िपन अभिराम छिन-छिन, दंपति सहज लड़ावहीं।
देखि इह सुख रंग दोऊ, मंद मधुर सुर गावहीं॥

(5)

जै जै श्रीवृन्दावन सहज सुहावनों।
नित्यबिहार अधार सदा मनभावनों॥

परम सुभग श्रीजमुना पुलिन मंजुल जहाँ।
विमल कमल कुल हंस सकल कूजित तहाँ॥
विमल कमल कुल हंस कूजित, सेवत खग मृग सुख भरे।
मुदित वन नव मोर निर्रत, राजत अति रुचि सौं खरे॥

(6)

कुसुमित कुंज रसाल लता अति सोहहीं।
अलिकुल कोकिल कीर कूजित मन मोहहीं॥
त्रिविध समीर बहत रस सुखद मनहिं लियैं।
बसंत सरद रितु सेवत चित-वित मनहिं दियैं॥
बसंत सरद सेवत सदा रितु, सुख समुद्रहिं को गनैं।
विविध भाँतिनि भूमि राजत, सोभा देखत ही बनैं॥

(7)

मंदिर नवल निकुंज मदन सेवत रहैं।
मनि मुक्ता फल फलित सोभा गुन को कहैं॥
श्रीकुंजबिहारी-बिहारिनि अतिसै राजहीं।
नित्यकिसोर सहज रति सुख में भ्राजहीं॥
नित्यकिसोर सहज सदा रति, गौर-स्याम तन सोहहीं।
कंचन तन घन-दामिनि रतिपति देखत छबि मन मोहहीं॥

(8)

अँग-सँग श्रीहरिदास बिहार करावहीं।
मननि लियैं अनुसार सहज दिन भावहीं॥
सुख संपति रहैं साज समयौ पाइ सु गावहीं।
तान तरंग मधुर सुर राग सुनावहीं॥

तान-तरंग सुनाइ मधुर सुर, कुँवरि-कुँवर सुख पावहीं।
रीझि-रीझि स्याबासि कहि, हँसि हार बसन पहिरावहीं॥

(9)

प्रगट बिहारिनदासि कृपा कौ वपु धर्यौ।
श्रीकृष्णदासि बड़भाग सेवत नित अनुसर्यौ॥
सील सुभाउ गुन अर्पि प्रिया प्रेमहिं लहैं।
चित-वित दै रुख लै मन सेवत नित रहैं॥
रहैं सेवत रुख लियैं नित, संक न काहू की करी।
जै श्रीवरबिहारिनदासि चरन रति, सूर ज्यों व्रत ना टरी॥

(10)

और बहुत अपनाइ जे मन वच क्रम अनुसरे।
मोसे पतित महा सठ तेऊ अपने करे॥

जैसें पारस परसि तें कंचन जानिये ।
 ऐसें किये श्रीनागरीदासि निश्चै उर आनिये ॥
 उर आनि निश्चै जानि यह सुख, चरन-कमल सेऊँ सदा ।
 जै श्रीवरबिहारिनदासि प्रगट नित सिंधु सुधा-रस सर्वदा ॥

(11)

मन वच क्रम करि यह जस जो नर गाइहैं ।
 मनबाँछित फल बेगि सदा सुख पाइहैं ॥
 निजु धन सर्वसु जानि उमँगि दुलराइहैं ।
 प्रेमलच्छिना भक्ति विपुल रस पाइहैं ॥
 रस पाइ विपुल आनंद बाढ़्यौ, जनम-जनम के श्रम गये ।
 जै श्रीवरबिहारिनदासि कृपा तें, मन मनोरथ सब भये ॥



छोटौ गुरु-मंगल

श्रीगुरु मंगल गाइ मना ।
 श्रीहरिदास चरन वंदन करि, विपुल विनोद बढ़ाइ घना ॥
 श्रीबिहारीबिहारिनिदासि परम रुचि, सरस मनोरथ पाइ घना ।
 श्रीनरहरि रसिकसिरोमनि मूरति, पीतांबर बलि जाइ जना ॥

-स्वा० श्रीपीतांबरदेव

आज महा मंगल भयौ माई ।
 भई प्रसन्न सिरोमनि राधे, यह सुख कह्यौ न जाई ॥
 परम प्रीति सौं विलसत दोऊ, प्रेम बढ़्यौ अधिकाई ।
 श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि,

उमँगि-उमँगि आनंद झरि लाई ॥

.-स्वा० श्रीललितकिशोरीदेवजी

आजु समाज सहज मन भायौ ।
 कुँवरि किसोरी गोरी भोरी, निरखि हरषि हँसि कंठ लगायौ ।।
 अपने अपने मेल मिलीं सब तान-तरंगनि रंग बढ़ायौ ।
 श्रीहरिदासी रसिकसिरोमनि, तन मन वचननि हियौ सिरायौ ।।
 -स्वा० श्रीललितमोहिनी देवजू



महामधुररससार-नित्य-विहार-प्रकाशक
 रसिक अनन्य मुकुटमणि

श्रीस्वामी जू महाराज की प्रशस्ति

(1)

नमो नमो श्रीहरिदास वृंदाविपिन-वास,
 वर प्रान-सर्वसु बाँकेबिहारी ।
 स्यामा स्याम जुगल रूप माधुर्य के,
 रसिक रिझवार प्रेमावतारी ।।
 परम वैराग्य-निधि बसत निधिवन सदा,
 भावना लीन सुप्रवीन भारी ।
 कामना कल्पतरु सकल संताप हरु,
 'अग्रदासअलि' कल्याणकारी ।।
 -स्वा० श्रीअग्रदासजी महाराज

(2)

जुगल नाम साँ नेम जपत नित कुंजबिहारी।
अवलोकत रहैं केलि सखी-सुख के अधिकारी॥
गान-कला-गंधर्व स्यामस्यामा कौं तोषैं।
उत्तम भोग लगाइ मोर मरकट तिमि पोषैं॥
नृपति द्वार ठाढ़ रहैं दरसन आसा जास की।
आसुधीर उद्यौत करि रसिक छाप हरिदास की॥

—श्रीस्वामी नाभादासजी

(3)

अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास।
श्रीकुंजबिहारी सेये बिन जिन, छिन न करी काहू की आस॥
सेवा सावधान अति जानि सुधर, गावत दिन रस रास।
ऐसौ रसिक भयौ नहिं है है, भुव मण्डल आकास॥

देह विदेह भये जीवत ही, बिसरे विस्व विलास।
श्रीवृन्दावन रेनु तन मन भजि, तजि लोक वेद की त्रास॥
प्रीति रीति कीनी सबहिन साँ, किये न खास खवास।
अपनों व्रत हठि ओर निबाह्यौ, जौलौं कंठ उसास॥
सुरपति भूपति कंचन कामिनि, जिनके भाये घास।
अबके साधु व्यास हमहूँ से, जगत करत उपहास॥

—श्रीहरिरामजी व्यास

(4)

रसिक अनन्यनि कौ पथ बाँकौ।
जा पथ कौ पथ लेत महामुनि, मुँदत नैन गहैं नित नाकौ॥
जा पथ कौ पछितात हैं वेद, लहैं नहिं भेद रहैं जकि जाकौ।
सो पथ श्रीहरिदास लह्यौ, रस-रीति की प्रीति चलाइ निसाँकौ।
निसाननि बाजत गाजत गोविंद, रसिक अनन्यनि कौ पथ बाँकौ॥

—श्रीगोविन्द स्वामीजी

(5)

रसिक अनन्य हरिदास जू, गायौ नित्य बिहार।
सेवा हू में दूर किये, विधि-निषेध जंजार॥1॥
सधन निकुंजनि रहत दिन, बाढ़्यौ अधिक सनेह।
एक बिहारी हेत लागि, छाँड़ि दिये सुख देह॥2॥
रंक छत्रपति दुहँनि की, धरी न मन परवाह।
रहे भीजि रस-माधुरी, लीनें कर करवाह॥3॥

(6)

घटा छटा नख सिख उठैं, साँवल गौर विलास।
घन प्रगट्यौ रस-रीति कौ, जै जै श्रीहरिदास॥1॥



श्रीस्वामी हरिदासजी की वाणी

अष्टादश सिद्धांत के पद

(1) [राग विभास]¹

ज्योंही-ज्योंही तुम राखत हौ,
त्योंही-त्योंही रहियत हौं, हो हरि।
और तौ अचरचे पाँय धरौं,
सो तौ कहौ कौन के पैड़ भरि॥
जद्यपि कियौ चाहौं अपनौ मनभायौ,
सो तौ क्यों करि सकौं, जो तुम राखौ पकरि।
कहिं श्रीहरिदास पिंजरा के जनावर लौं
तरफराय रह्यौ, उड़िबे कौं कितौऊ करि॥

(2) [राग विभास]²

काहू कौ बस नाहिं, तुम्हारी कृपा तैं सब होय,

बिहारी - बिहारिनि ।

और मिथ्या प्रपंच, काहे कौं भाषियै,

सु तौ है हारिनि ॥

जाहि तुमसौं हित, तासौं तुम हित करौ,

सब सुख-कारनि ।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,

प्राणन के आधारनि ॥

(3) [राग विभास]³

कबहूँ-कबहूँ मन इत-उत जात, यातैंब कौन अधिक सुख ।

बहुत भाँतिन घत आनि राख्यौ, नाहिं तौ पावतौ दुख ॥

कोटि काम लावन्य बिहारी,

ताके मुहाँचुही सब सुख लियैं रहत रुख ।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी कौ

दिन देखत रहौं विचित्र मुख ॥

(4) [राग विभास]⁴

हरि भज, हरि भज, छाँड़ि न मान, नर-तन कौ ।

मत बंछै, मत बंछै रे, तिल-तिल धन कौ ॥

अनमाँग्यौ आगैं आवैगौ, ज्यों पल लागै पलकौ ।

कहिं श्रीहरिदास मीचु ज्यों आवै, त्यों धन है आपुन कौ ॥

(5) [राग बिलावल]¹

✓ ए हरि, मो-सौ न बिगारन कौ,
तो-सौ न सँवारन कौ, मोहिं-तोहिं परी होड़।
कौन धौं जीतै, कौन धौं हारै, पर बदी न छोड़।।
तुम्हारी माया बाजी विचित्र पसारी,
मोहे मुनि का के भूले कोड़।
कहिं श्रीहरिदास हम जीतै, हारे तुम, तऊ न तोड़।।

(6) [राग आसावरी]¹

बंदे अखतियार भला।
चित न डुलाव, आव समाधि भीतर, न होहु अगला।।
न फिर दर-दर, पिदर-दर, न होहु अँधला।
कहिं श्रीहरिदास करता किया सो हुआ, सुमेर अचल चला।।

(7) [राग आसावरी]²

हित तौ कीजै कमलनैन सौं,
जा हित के आगैं, और हित लागै फीकौ।
कै हित कीजै साधु-संगति सौं,
ज्यों कलमष जाय सब जी कौ।।
हरि कौ हित ऐसौ, जैसौ रंग मजीठ,
संसार हित रंग कसूँभ दिन दुती कौ।
कहिं श्रीहरिदास हित कीजै श्रीबिहारीजू सौं,
ओर निबाहू जानि जी कौ।।

(8) [राग आसावरी]³

तिनुका ज्यों बयार के बस।
ज्यों चाहै त्यों उड़ाय लै डारै अपने रस।।
ब्रह्मलोक, शिवलोक, और लोक अस।
कहिं श्रीहरिदास बिचारि देखौ, बिना बिहारी नाहिं जस।।

(9) [राग आसावरी]⁴

संसार समुद्र, मनुष्य मीन-नक्र-मगर, और जीव बहु बंदसि।
मन - बयार प्रेरे, स्नेह - फंद फंदसि॥
लोभ पिंजर, लोभी मरजिया, पदारथ चार खंद खंदसि।
कहिं श्रीहरिदास तेई जीव पार भए,

जे गहि रहे चरन आनंद-नंदसि॥

(10) [राग आसावरी]⁵

हरि के नाम कौ आलस कत करत है रे,

काल फिरत सर साँधैं।

बेर-कुबेर कछू नहिं जानत, चढ़्यौ रहत है काँधैं॥

हीरा बहुत जवाहर संचे, कहा भयौ हस्ती दर बाँधैं।

कहिं श्रीहरिदास महल में बनिता बनि ठाढ़ी भई,

एकौ न चलत, जब आवत अंत की आँधैं॥

(11) [राग आसावरी]⁶

देखौ इन लोगन की लावनि।

बूझत नाहिं हरि चरन-कमल कौं, मिथ्या जनम गँवावनि॥

जब जमदूत आइ घेरत, तब करत आप मन-भावनि।

कहिं श्रीहरिदास तबहिं चिरजीवौ, जब कुंजबिहारी चितावनि॥

(12) [राग आसावरी]⁷

मन लगाय प्रीति कीजै कर करवा सौं, ब्रज-बीथिन दीजै सोहनी।

वृंदावन सौं, बन-उपवन सौं, गुंज-माल हाथ पोहनी॥

गो गो-सुतन सौं, मृगी मृग-सुतन सौं, और तन नैकु न जोहनी।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी सौं चित,

ज्यों सिर पर दोहनी॥

✓ 31 (13) [राग कल्याण]¹

हरि कौ ऐसौई सब खेल।

मृग-तृष्णा जग व्यापि रह्यौ है, कहूँ बिजौरौ न बेल॥

धन मद, जोवन मद, राज मद, ज्यों पंछिन में डेल।

कहिं श्रीहरिदास यहै जिय जानौ, तीरथ कौसौ मेल॥

(14) [राग कल्याण]²

झूठी बात साँची करि दिखावत हो, हरि नागर।

निसे-दिन बुनत-उधेरत जात, प्रपंच कौ सागर॥

ठाठ बनाइ धर्यौ मिहरी कौ, है पुरुष तैं आगर।

सुनि श्रीहरिदास यहै जिय जानौ, सपने कौ सौ जागर॥

(15) [राग कल्याण]³

जगत प्रीति करि देखी, नाहिंनें गटी कौ कोऊ।

छत्रपति रंक लौं देखे, प्रकृति विरोध बन्यौ नहीं कोऊ॥

दिन जो गये बहुत जनमनि के, ऐसैं जाहु जिन कोऊ।
कहिं श्रीहरिदास मीत भलैं पाये बिहारी, ऐसे पाउ सब कोऊ॥

(16) [राग कल्याण]⁴

लोग तौ भूलैं, भलैं भूलैं,

तुम जिनि भूलौ मालाधारी॥

अपुनौ पति छाँड़ि औरन सों रति,

ज्यों दारनि में दारी॥

स्याम कहत ते जीव मोतें बिमुख भए,

सोऊ कौन, जिन दूसरी करि डारी।

कहिं श्रीहरिदास जज्ञ, देवता, पितरन

कों श्रद्धा भारी॥

(17) [राग कल्याण]⁵

जौलों जीवै, तौलों हरि भज रे मन, और बात सब बादि।
 घौस चार के हला-भला, तू कहा लेइगौ लादि।।
 माया-मद, गुन-मद, जोबन-मद, भूल्यौ नगर विवादि।
 कहिं श्रीहरिदास लोभ चरपट भयौं, काहे की लगै फिरादि।।

(18) [राग कल्याण]⁶

प्रेम-समुद्र रूप-रस गहरे, कैसैं लागैं घाट।
 बेकार्यौं दै जान कहावत, जानिपन्यौं की कहा परी बाट।।
 काहू कौ सर सूधौ न परै, मारत गाल गली-गली हाट।
 कहिं श्रीहरिदास जानि ठाकुर बिहारी, तकत ओट पाट।।



श्रीकेलिमाल

सखी की बोलनि (1) [राग कान्हरी]¹

माई री, सहज जोरी प्रगट भई,
 जु रंग की गौर-स्याम घन-दामिनि जैसैं।
 प्रथम हूँ हुती, अब हूँ, आगें हूँ रहिहै, न टरिहै तैसैं।।
 अंग-अंगों की उजराई सुघराई चतुराई सुंदरता ऐसैं।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी, सम वैस वैसैं।।

विहार की झाँकी (2) [राग कान्हरी]²

रुचि के प्रकास परस्पर खेलन लागे।
 राग-रागिनी अलौकिक उपजत,

नृत्य संगीत अलग लाग लागे।।

राग ही में रंग रह्यौ, रंग के समुद्र में ये दोउ झागे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-

कुंजबिहारी पै रंग रह्यौ, रस ही में पागे ॥

कृतज्ञता के भाव (3) [राग कान्हारौ]³

ऐसैं ही देखत रहौं, जनम सुफल करि मानौं।

प्यारे की भाँवती, भाँवतीजू के प्यारे, जुगल किसोरहिं जानौं ॥

छिनु न टरौं, पल हौंहुं न इत-उत, रहौं एक ही तानौं।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी मन रानौं ॥

सखी सों जोरी के गुनवरनन (4) [राग कान्हारौ]⁴

जोरी विचित्र बनाई री माई, काहू मन के हरन कौं।

चितवत दृष्टि टरत नहिं इत-उत, मन बच क्रम याही संग भरन कौं ॥

ज्यौं घन-दामिनि संग रहत नित, बिछुत नाहिं और बरन कौं।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी, न टरन कौं ॥

लालजू के बचन (5) [राग कान्हारौ]⁵

इत उत काहे कौं सिधारति, आँखिन आगैं ही तू आव।

प्रीति कौ हितु हौं तौ तेरौ जानौ, ऐसौई राखि सुभाव ॥

अमृत से बचन जिय की प्रकृति सों मिलैं, ऐसौई दै दाव।

श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी, प्रीति को मंगल गाव ॥

लालजू के बचन (6) [राग कान्हारौ]⁶

प्यारी जू, जैसैं तेरी आँखिन में हौं अपनपौ देखत हौं,

ऐसैं तुम देखति हौ, किधौं नाहीं।

हौं तोसौं कहाँ प्यारे, आँखि मूँदि रहौं,

तौ लाल निकसि कहाँ जाहीं ॥

मोकाँ निकसिबे कौं ठौर बतावौ,

साँची कहौ, बलि जाहुँ लागौं पाँहीं।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-

तुमहिं देख्यौ चाहत, और सुख लागत काँहीं ॥

लालजू के बचन (7) [राग कान्हरौ]⁷

प्यारी, तेरौ बदन अमृत की पंक, तामैं बींधे नैन द्वै।

चित चलयौ काढ़न कौं, बिकुच संधि संपुट में रह्यौ भवै॥

बहुत उपाड़ आहि री प्यारी, पै न करत स्वै।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी, ऐसैं ही रहौ है॥

लालजू के बचन (8) [राग कान्हरौ]⁸

आवत जात बजावत नूपुर।

मेरौ-तेरौ न्याव दर्ई के आगैं,

जो कछु करौ सो हमारे सिर-ऊपर॥

निकट निपट मवास है रही प्यारी जू, पैंड दूपर।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-

कुंजबिहारी, बिलसौ निहचल धूपर॥

लालजू की मादकता (9) [राग कान्हरौ]⁹

दृष्टि चैंप बर फंदा, मन पिंजरा,

राख्यौ लै पंछी बिहारी।

चुन्नै सुभाव प्रेमजल अंग स्रवत,

पीवत न अघात रहे मुख निहारी॥

प्यारी-प्यारी रटत रहत छिन ही छिन,

याकें और न कछू हिया री।

सुनि हरिदास पंछी नाना रंग देखत ही-

देखत, प्यारी जू न हारी॥

मनुहार के बचन

(10)

[राग कान्हरौ]¹⁰

भूलैं-भूलैं हूँ मान न करि री प्यारी,

तेरी भौंहें मैली देखत, प्रान न रहत तन।

ज्यों न्यौछावरि करौं प्यारी तो पर,

काहे तैं तू मूकी कहत स्यामघन॥

तोहिं ऐसैं देखत, मोहिं अब कल,
 कैसें होइ जु प्रान-धन।
 सुनि हरिदास काहे न कहत,
 यासों छाँड़िब छाँड़ि अपनों पन॥
 श्रीहरिदासजू के बचन (11) [राग कान्हारौ]¹¹
 बात तौ कहत कहि गई, अब कठिन परी बिहारी।
 प्रान तौ नाहिनैं; तन अस्त-बिस्त भये, कहैं कहा प्यारी॥
 भाँवते की प्रकृति देखैं जो स्रम भयौ, बहुत हिया री।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, बाहु सों बाहु मिलाय रहे मुख निहारी॥
 सखी के बचन (12) [राग कान्हारौ]¹²
 कुंजबिहारी, हौं तेरी बलाइ लेउँ, नीकै हौं गावत।
 राग - रागिनीन के जूथ उपजावत॥

तैसीयै तैसी मिली जोरी, प्रियाजू कौ मुख देखत चंद लजावत।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौ नृत्य देखत काहि न भावत॥
 बिहार की झाँकी (13) [राग कान्हारौ]¹³
 एक समै एकांत बन में,
 करत सिंगार परस्पर दोई।
 वे उनके, वे उनके प्रतिबिंबन देखत,
 रहत परस्पर भोई॥
 जैसे नीके आजु बने, ऐसे कबहूँ न बने,
 आरसी सब झूठी परी कैसीयैव कोई।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
 रीझि परस्पर प्रीति नोई॥

श्रीहरिदासजू के बचन (14) [राग कान्हारौ]¹⁴

राधे चलि री, हरि बोलत, कोकिला अलापत,

सुर देत पंछी राग बन्यौ।

जहाँ मोरे काछ बाँधैं नृत्य करत,

मेघ मृदंग बजावत बंधान गन्यौ॥

प्रकृति की कोऊ नाहीं; यातैं सुरति के उनमान

गहि हौं आई मैं जन्यौ।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी

की अटपटी बानि, औरै कहत, कछू औरै भन्यौ॥

सखी के बचन (15) [राग कान्हारौ]¹⁵

तेरौ मग जोवत लाल बिहारी।

तेरी समाधि अजहूँ नहिं छूटत, चाहत नाहिं नैकु निहारी॥

औचक आइ, द्वै कर सौं मूँदे नैन, अरबराइ उठी चिहारी।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-ढूँढत बन में, पाई प्रिया दिहारी॥

सखी के बचन प्रीयाजू सों (16) [राग कान्हारौ]¹⁶

मानि तू अब चलि री, एक संग रह्यौ कीजै।

तौ कीजै जो बिन देखैं जीजै॥

ये स्याम घन, तुम दामिनि, प्रेम-पुंज बरषा रस पीजै।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा,

कुंजबिहारी सौं हिलि-मिलि रँग लीजै॥

सखी के बचन प्रीयाजू सों (17) [राग कान्हारौ]¹⁷

तूरिस छाँड़ि री, राधे-राधे!

ज्यों-ज्यों तोकों गहरु,

त्यों-त्यों मोकों बिथा री साधे-साधे॥

प्राननि कौं पोषत है री, सुनियत तेरे बचन आधे-आधे।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा,

कुंजबिहारी तेरी प्रीति बाँधे-बाँधे॥

सखी के बचन (18) [राग कान्हारौ]¹⁸

आजु तून टूटत है री, ललित त्रिभंगी पर।
चरन-चरन पर मुरली अधर धरै, चितवनि बंक छबीली भू पर।।
चलहुन बेगि राधिका पिय पै, जो भयौ चाहत हौ सर्वोपर।
श्रीहरिदास के स्वामी कौ समयौ अब नीकौ बन्यौ,
हिल-मिल केलि अटल रति भई धू पर।।

होरी का खेल (19) [राग कान्हारौ]¹⁹

✓ दिन डफ ताल बजावत, गावत,
भरत परस्पर छिन छिन होरी।
अति सुकुमार बदन स्रम बरसत,
भले मिले रसिक किसोर किसोरी।।

वातनि बतबतात, राग रंग रमि रह्यौ,

इत-उत चाह चलत तकि खोरी।

सुजि श्रीहरिदास तमाल स्याम सौं,

लता लपटि कंचन की थोरी।।

राधेजू की रूप माधुरी (20) [राग कान्हारौ]²⁰

द्वै लर मोतिन की, एक पुंजा पोत कौ सादा,

नेत्रनि दृष्टि लागौ जिन मेरी।
हाथनि चारि-चारि चूरी, पाँयनि इकसार
चूरा चौपहलू, इकटक रहे हरि हेरी।।
एक मरगजी सारी, तन तैं कंचुकी न्यारी,
अरु अँचरा की बाई गति मोरि उरसनि फेरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी
या रस ही बस भए, हरैं-हरैं सरकनि नेरी।।

प्रीयाजू की शोभा (21) [राग कान्हारौ]²¹

जोबन-रंग रंगीली, सोने से गात,

ढरारे नैना, कंठ पोत मखतूली।

अंग-अंग अनंग झलकत, सोहत काननि बीरें
सोभा देत देखत ही बनै, जौन्ह में जौन्ह सी फूली॥
तनसुख सारी, लाही अँगिया, अतलस अतरौटा,
छवि चारि-चारि चूरी, पहुँचनि पहुँची खमकि बनी,
नकफूल जेब, मुख बीरा, चौका कौंधै, सभ्रम भूली।
ऐसी नित्य बिहारिनि श्रीबिहारीलाल संग,
अति आधीन, आतुर लटपटात ज्यों तरु तमाल,
कुंज महल श्रीहरिदासी जोरी सुरति हिंडोरें झूली॥

लालजू के बचन (22) [राग कान्हारौ]²²

राधे दुलारी, मान तजि।
प्राज्ञ पायौ जात मेरौ है री, सजि॥
अपनौ हाथ मेरे माथें धरि, अभै - दान दै अजि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी
कहत री प्यारी, रंग रुचि सौं बलि लजि॥

सखी के बचन (23) [राग कान्हारौ]²³

गुन की बात राधे, तेरे आगैं को जानैं,
जो जानैं सो कछु उनहारि।
नृत्य-गीत-ताल भेदनि के बिभेद न जानैं,
कहूँ जिते किते देखे झारि॥

तत्त्व सुद्ध स्वरूप, रेख परमान,

जे बिज्ञ सुर सुघर ते पचे भारि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी नैंक तुम्हारी

प्रकृति के अंग-अंग, और गुनी परे हारि।।

सखी के बचन (24) [राग कान्हारौ]²⁴

सुघर भए हौ बिहारी, याही छाँह तैं।

जे-जे गटी सुघर सुर जानपनैं की, ते-ते याही बाँह तैं।।

हुते तौ अधिक बड़े सब ही तैं, पै इनकी कस न खटात याँह तैं।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी जकि रहे चाह तैं।।

सखी और लालजू की बोलनि (25) [राग कान्हारौ]²⁵

राधा, रसिक कुंजबिहारी कहंत जु, हौं न कहूँ गयौ,

सुनि-सुनि राधे, तेरी सौं।

मोहिं न पत्याहु तौ संग हरिदासी हुती,

पूछि देखि भटू, कहि धौं कहा भयौ, मेरी सौं।।

प्यारी, तोहि गठौं धन प्रतीत, छाँड़ि छीया,

जानि दै इतनीब एरी सौं।

गहि लपटाइ रहे छैल दोऊ,

छाती सौं छाती लगाइ, फेरा-फेरी सौं।।

लालजू के बचन (26) [राग कान्हारौ]²⁶

प्यारी, तेरी महिमा बरनी न जाय मोपै,

जिहिं आलस काम बस कीन।

ताकौ दंड हमें लागत है री, भए आधीन।।

साढ़े ग्यारह ज्यों औँटि, दूजैं नव सत साजि,

सहज ही तामैं जवादि कर्पूर कस्तूरी कुमकुम के रंग भीन।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी रस बस करि लीन।।

सखी के बचन (27) [राग कान्हरौ]²⁷

स्रम जल कन नाहीं होत, मोती माला कौं देहु।
देखे बहुत अमोल, मोल नाहीं, तन मन धन न्यौछावरि लेहु।।
रति विपरीति प्रीति कौ आलस नाहीं, नायक तेरे मधि एहु।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
प्रीति वर मिलए वेहु।।

सखी के बचन (28) [राग कान्हरौ]²⁸

नील लाल गौर के ध्यान बैठे कुंजबिहारी।
ज्यों-ज्यों सुख पावत नाहीं, त्यों-त्यों दुख भयौ भारी।।
अरबराइ, प्रगट भई जु, सुख भयौ बहुत हिया री।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी करि मनुहारी।।

सखी के बचन (29) [राग कान्हरौ]²⁹

आजु की बानिक प्यारे तेरी, प्यारी तुम्हारी,
बरनी न जाइ छबि।

इनकी स्यामता, तुम्हारी गौरता,
जैसे सित-असित बैनी, रही ज्यों भुवंगम दबि।।
इनकौ पीतांबर, तुम्हारौ नील निचोल,
ज्यों ससि कुंदन जेब रवि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी की सोभा
बरनी न जाय, जो मिलैं रसिक कोटि कवि।।

सखी के बचन (30) [राग कान्हरौ]³⁰

देखि-देखि फूल भई।
प्रेम के प्रकास प्रीति के आगै है जु लई।।

सुन री सखी! बागौ बन्यौ आजु,

तुम पर तून टूटत है जु नई।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी सकल

गुन निपुन, ता-ता-थेई ता-थेई गति जु ठई॥

सखीन की बोलनि (31) [राग केदारौ]¹

ऐसी तौ बिचित्र जोरी बनी।

ऐसी कहूँ देखी सुनी न भनी॥

मनहुँ कनक सुदाह करि-करि, देह अद्भुत ठनी।

श्रीहरिदास के स्वामी स्याम-तमालै उठंगि, बैठी धनी॥

श्रीहरिदासजू के बचन (32) [राग केदारौ]²

हँसत, खेलत, बोलत, मिलत,

देखौ मेरी आँखिन सुख।

बीरी परस्पर लेत खवावत, ज्यौँ दामिनि-

घन चमचमात, सोभा बहु भाँतिन सुख॥

सुति घुरि राग केदारौ जम्यौ,

अधराति निसा रोंम-रोँम सुख।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी

के आवत, सुर देत मोर, भयौ परम सुख॥

बिहार की छवि (33) [राग केदारौ]³

अद्भुत गति उपजति अति,

नृत्तत दोऊ मंडल कुँवर किसोरी।

सकल सुधंग अंग भरि भोरी, पिय नृत्तत

मुसकनि मुख मोरी, परिरंभन रस रोरी॥

ताल धरें बनिता, मृदंग चंद्रागति,
 घात बजै थोरी-थोरी।
 सप्त भाइ भाषा बिचित्र,
 ललिता गायनि चित चोरी॥
 श्रीवृंदावन फूलनि फूल्यौ, पूरन ससि,
 त्रिविध पवन बहै थोरी-थोरी।
 गति बिलास रस हास परस्पर,
 भूतल अद्भुत जोरी॥
 श्रीजमुना-जल बिथकित, पहुपनि बरषा,
 रतिपति डारत तृन तोरी।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी जू
 कौ रस रसना कहै को री॥

लालजू के बचन प्रीयाजू ते (34) [राग केदारौ]⁴
 प्यारी जू! जब-जब देखौं तेरौ मुख,
 तब - तब नयौ - नयौ लागत।
 ऐसौ भ्रम होत, मैं कबहुँ देखी न री,
 दुति कौ दुति लेखनी न कागत॥
 कोटि चंद तैं कहाँ दुराये री, नये-नये रागत।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत,
 काम की सांति न होइ, न होइ तृपति, रहैं निस-दिन जागत॥
 लालजू की रिझवारता (35) [राग केदारौ]⁵
 ऐसी जिय होत, जो जिय सौं जिय मिलै,
 तन सौं तन समाइ लैहुँ, तौ देखौं कहा हो प्यारी।
 तो ही सौं हिलगि, आँखिन सौं आँखें मिली रहैं,
 जीवत कौ यहै लहा हो प्यारी॥

मोकों इतौ साज कहाँ री प्यारी,
हैं अति दीन तुव बस, भुव-छेप न जाय सहा हो प्यारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत, राखि लै री
बाहु-बल, हैं बपुरा काम-दहा हो प्यारी॥

लालजू की आसक्ति (36) [राग केदारौ]⁶

आजु रहसि मैं देखियत प्यारी जू,
एक बोल माँगों जो लिखि देहु।
साखी तेरे नैन-दसन-कच-कुच-
कटि-नितंब, जो लिखि देहु॥
प्रीति द्रव्य, रुचि ब्याज परस्पर,
मन-बच-क्रम जो लिखि देहु।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्यारी पै
बोल बुलाय लियौ लिखि देहु॥

लालजू के बचन प्रीयाजू ते (37) [राग केदारौ]⁷

प्यारी तेरी बाँफिन बान सु मार लागै,
भौंहें ज्यों धनुष।
एक ही बार यों छूटत,
जैसे बादर बरषत इंद्र अनख॥
और हथियार को गनै री,
चाहनि कनख।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी सौं,
प्यारी! जब तू बोलति चनख-चनख॥

प्रीयाजू के बचन (38) [राग केदारौ]⁸

काहे तैं आजु
अटपटे से हरि!
अटपटी पाग, अटपटे से बंद,
अटपटी देत आगें सरि॥

अटपटे पाँय परत में परखे,
 जब आवत हे इत ढरि।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम जानि हों पाये,
 आजु लाल औरें परि॥
 लालजू के बचन (39) [राग केदारौ]⁹
 काहे कौं मान करत,
 मोहिब कत दुख देत।
 बासे की सी दृष्टि लियें रहैं,
 तेरी जीवनि तोहि समेत॥
 अब कछु ऐसी करौ, जु भाँहनि
 टाटी जिनि देहु, कहत इतनेत।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
 छल कै गरैं लगाइ भई रमेत॥

लालजू की कृतज्ञता (40) [राग केदारौ]¹⁰
 रोंम-रोम रसना जो होती,
 तऊ तेरे गुन न बखाने जात।
 कहा कहाँ एक जीभ सखी री,
 बात की बात बात॥
 भानु स्रमित और ससि हू
 स्रमित भये, और जुबति-जात।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी,
 तू राखत प्राण जात॥
 लालजू के बचन (41) [राग केदारौ]¹¹
 तुव जस कोटि ब्रह्मांड बिराजै राधे।
 श्री सोभा बरनी न जाइ अगाधे॥

बहुतक जनम बिचारत ही गए साधे-साधे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी!
ए दिन मैं क्रम-क्रम करि लाधे॥

सखी के बचन (42) [राग केदारौ]¹²

फूलीं सब सखी देखि-देखि।
जच्छ, किन्नर, नागलोक, देवस्त्री
रीझि रहीं भुव लेखि-लेखि॥
कहत परस्पर नारि नारि सौं,
यह सुंदरता अवरिखि रेखि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा,
ए कैसे हूँ चितये, परेखि रेखि॥

सखी के बचन प्रीयाजू ते (43) [राग केदारौ]¹³

पिय सौं तू जोई जोई करै, सोई छाजै।
और सेंघ करै जो तेरी, सोई लाजै॥

तू सुरग्यान सब अंग सखी री, मान करत बे-काजै।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम, जिय में बसै, तू नित-नित बिराजै॥

सखी के प्रीयाजू सौं बचन (44) [राग केदारौ]¹⁴

सोई तौ बचन मो सौं मानि,
तैं मेरौ लाल मोहौ री साँवरौ।
नव निकुंज सुख-पुंज महल में,
सुबस बसौ यह गाँवरौ॥
नव-नव लाड़ लड़ाइ लाड़िली,
नहिं-नहिं यह ब्रज जाँवरौ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी पै
बारौंगी मालती भाँवरौ॥

प्रीयाजू ते सखी के बचन (45) [राग केदारौ]¹⁵

जो कछु कहत लाड़िलौ,
लाड़िली जू सुनियै कान दै।

जो जिय उपजै सो तिहारेई
हित की, कहत हों आन दै॥

मोहिं न पत्याहु, तौ छाती
टकटोरि देखौ पान दै।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी
जाचक कौं दान दै॥

लालजू के बचन (46) [राग केदारौ]¹⁶

प्यारी जू! आगैं चलि, आगैं चलि,
गहवर बन भीतर जहाँ बोलै कोइल री।

अति ही विचित्र फूल-पत्रन की सेज्या रची,
रुचिर सँवारी तहाँ तूब सोइल री॥

छिन-छिन पल-पल तेरीऐ कहानी,

तुव मग जोइल री।

श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत

छबीलौ काम - रस भोइल री॥

सखी के बचन लालजू ते (47) [राग केदारौ]¹⁷

“प्यारी अब सोइ गई।

ज्यों-ज्यों जगावत, त्यों-त्यों नहिं जागत,

प्रेम-रस पान करि भोइ गई॥

जागत होइ तौ जगाऊँ प्यारी, तातैंब परम सचु,

रस ही रसिक रस बोइ गई।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा उठिकैं गरैं लगाई,

नवल प्रीति सौं नोइ गई॥

सखीन के परस्पर के बचन (48) [राग केदारौ]¹⁸

डोल झूलत दुलहिनी-दूलहु।
उड़त अबीर, कुमकुमा छिरकत,
खेल परस्पर सूलहु॥

बाजत ताल रबाब और बहु,
तरनी - तनया कूलहु।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी कौ
अनतब नाहिनै फूलहु॥

लालजू ते सखी के बचन (49) [राग केदारौ]¹⁹

प्यारी पहिरैं चूनरी।
तैसौई लंहगा बन्यौ सिलसिलौ, पूरनमासी की सी पूनरी॥
हों जु कहत चलियै मनमोहन, मानैगी न घूनरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी चरन लपटाने दुहूँ री॥

प्रीयाजू सों लालजू के बचन (50) [राग केदारौ]²⁰

बनी री तेरैं चारि-चारि चूरी करन।
कंठसिरी दुलरी हीरनि की,
नासा मुक्ता ढरनि॥

तैसौई नैनन कजरा फबि रह्यौ,
निरखि काम डरनि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा,
कुंजबिहारी रीझि-रीझि पग परनि॥

लालजू ते सखी के बचन (51) [राग केदारौ]²¹

प्यारी अब क्यों हूँ क्यों हूँ आई है।
इत तुम समित अधिक मनमोहन,
मैं कोटि जतन समझाई है॥

उत हठ करति बहुत नव नागरि,
 तैसीयै नई ठकुराई है।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कर जोरि, मौन है,
 दूबरे की राँधी खीर, कहौ कौन खाई है॥
 रास का पद सखी के बचन (52) [राग केदारौ]²²
 सुनि धुनि मुरली बन बाजै,
 हरि रास रच्यौ।
 कुंज-कुंज द्रुम बेलि प्रफुल्लित,
 मंडल कंचन मनिन खच्यौ॥
 नृत्तत जुगलकिसोर जुबति जन,
 मन मिलि राग केदारौ मच्यौ।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
 नीकैं री आजु प्यारौ लाल नँच्यौ॥

लालजू के बचन प्यारीजू ते (53) [राग कल्यान]¹
 जहाँ-जहाँ चरन परत प्यारी जू तेरे,
 तहाँ-तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाँही।
 बहुत मूरति मेरी चँवर दुरावति,
 कोऊ बीरी खवावति एकब आरसी लै जाहीं॥
 और सेवा बहुत भाँतिन की, जैसीयै कहैं कोऊ,
 तैसीयै करौं जो रुचि जानौं जाहीं।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौं
 भलैं मनावत दाइ उपाहीं॥

लालजू के बचन प्रीयाजू ते (54) [राग कल्यान]²
 यह कौन बात जु, अबही और,
 अबही और, अबही औरै।

प्रीयाजू की शोभा (21) [राग कान्हारौ]²¹

जोबन-रंग रंगीली, सोने से गात,

ढारे नैना, कंठ पोत मखतूली।

अंग-अंग अनंग झलकत, सोहत काननि बीरें
सोभा देत देखत ही बनै, जौन्ह में जौन्ह सी फूली॥

तनसुख सारी, लाही अँगिया, अतलस अतरौटा,

छवि चारि-चारि चूरी, पहुँचनि पहुँची खमकि बनी,

नकफूल जेब, मुख बीरा, चौका कौंधै, सभ्रम भूली।

ऐसी नित्य बिहारिनि श्रीबिहारीलाल संग,

अति आधीन, आतुर लटपटात ज्यों तरु तमाल,

कुंज महल श्रीहरिदासी जोरी सुरति हिंडोरें झूली॥

लालजू के बचन (22) [राग कान्हारौ]²²

राधे दुलारी, मान तजि।

प्राज्ञ पायौ जात मेरौ है री, सजि॥

अपनों हाथ मेरे मारथें धरि, अभै - दान दै अजि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी

कहत री प्यारी, रंग रुचि साँ बलि लजि॥

सखी के बचन (23) [राग कान्हारौ]²³

गुन की बात राधे, तेरे आगें को जानें,

जो जानें सो कछु उनहारि।

नृत्य-गीत-ताल भेदनि के बिभेद न जानें,

कहूँ जिते किते देखे झारि॥

तत्त्व सुद्ध स्वरूप, रेख परमान,
 जे बिज्ञ सुर सुघर ते पचे भारि।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी नैंक तुम्हारी
 प्रकृति के अंग-अंग, और गुनी परे हारि।।
 सखी के बचन (24) [राग कान्हरौ] ²⁴
 सुघर भए हौ बिहारी, याही छाँह तैं।
 जे-जे गटी सुघर सुर जानपनैं की, ते-ते याही बाँह तैं।।
 हुते तौ अधिक बड़े सब ही तैं, पै इनकी कस न खटात याँह तैं।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी जकि रहे चाह तैं।।
 सखी और लालजू की बोलनि (25) [राग कान्हरौ] ²⁵
 राधा, रसिक कुंजबिहारी कहंत जु, हौं न कहूँ गयौ,
 सुनि-सुनि राधे, तेरी सौं।

मोहिं न पत्याहु तौ संग हरिदासी हुती,
 पूछि देखि भटू, कहि धौं कहा भयौ, मेरी सौं।।
 प्यारी, तोहि गठौं धन प्रतीत, छाँड़ि छोया,
 जानि दै इतनीब एरी सौं।
 गहि लपटाइ रहे छैल दोऊ,
 छाती सौं छाती लगाइ, फेरा-फेरी सौं।।
 लालजू के बचन (26) [राग कान्हरौ] ²⁶
 प्यारी, तेरी महिमा बरनी न जाय मोपै,
 जिहिं आलस काम बस कीन।
 ताकौ दंड हमैं लागत है री, भए आधीन।।
 साढ़े ग्यारह ज्यों औँटि, दूजैं नव सत साजि,
 सहज ही तामैं जवादि कर्पूर कस्तूरी कुमकुम के रंग भीन।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी रस बस करि लीन।।

सखी के बचन (27) [राग कान्हारौ]²⁷

स्रम जल कन नहीं होत, मोती माला कौं देहु।
देखे बहुत अमोल, मोल नहीं, तन मन धन न्यौछावरि लेहु।।
रति विपरीति प्रीति कौ आलस नहीं, नायक तेरे मधि एहु।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
प्रीति वर मिलए वेहु।।

सखी के बचन (28) [राग कान्हारौ]²⁸

नील लाल गौर के ध्यान बैठे कुंजबिहारी।
ज्यों-ज्यों सुख पावत नहीं, त्यों-त्यों दुख भयौ भारी।।
अरबराइ, प्रगट भई जु, सुख भयौ बहुत हिया री।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी करि मनुहारी।।

सखी के बचन (29) [राग कान्हारौ]²⁹

आजु की बानिक प्यारे तेरी, प्यारी तुम्हारी,
बरनी न जाइ छबि।

इनकी स्यामता, तुम्हारी गौरता,
जैसे सित-असित बैनी, रही ज्यों भुवंगम दबि।।
इनकौ पीतांबर, तुम्हारौ नील निचोल,
ज्यों ससि कुंदन जेब रवि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी की सोभा
बरनी न जाय, जो मिलैं रसिक कोटि कवि।।

सखी के बचन (30) [राग कान्हारौ]³⁰

देखि-देखि फूल भई।
प्रेम के प्रकास प्रीति के आगै ह्वै जु लई।।

सुन री सखी! बागौ बन्यौ आजु,

तुम पर तृन टूटत है जु नई।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी सकल

गुन निपुन, ता-ता-थेई ता-थेई गति जु ठई॥

सखीन की बोलनि (31) [राग केदारौ]¹

ऐसी तौ बिचित्र जोरी बनी।

ऐसी कहूँ देखी सुनी न भनी॥

मनहुँ कनक सुदाह करि-करि, देह अद्भुत ठनी।

श्रीहरिदास के स्वामी स्याम-तमालै उठंगि, बैठी धनी॥

श्रीहरिदासजू के बचन (32) [राग केदारौ]²

हँसत, खेलत, बोलत, मिलत,

देखौ मेरी आँखिन सुख।

बीरी परस्पर लेत खवावत, ज्यों दामिनि-

घन चमचमात, सोभा बहु भाँतिन सुख॥

सुति घुरि राग केदारौ जम्यौ,

अधराति निसा रोंम-रोँम सुख।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी

के आवत, सुर देत मोर, भयौ परम सुख॥

बिहार की छवि (33) [राग केदारौ]³

अद्भुत गति उपजति अति,

नृत्तत दोऊ मंडल कुँवर किसोरी।

सकल सुधंग अंग भरि भोरी, पिय नृत्तत

मुसकनि मुख मोरी, परिरंभन रस रोरी॥

ताल धरें बनिता, मृदंग चंद्रागति,
 घात बजै थोरी-थोरी।
 सप्त भाइ भाषा बिचित्र,
 ललिता गायनि चित चोरी॥
 श्रीवृंदावन फूलनि फूल्यौ, पूरन ससि,
 त्रिविध पवन बहै थोरी-थोरी।
 गति बिलास रस हास परस्पर,
 भूतल अद्भुत जोरी॥
 श्रीजमुना-जल बिथकित, पहुपनि बरषा,
 रतिपति डारत तृन तोरी।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी जू
 कौ रस रसना कहै को री॥

लालजू के बचन प्रीयाजू ते (34) [राग केदारौ]⁴
 प्यारी जू! जब-जब देखौं तेरौ मुख,
 तब - तब नयौ - नयौ लागत।
 ऐसौ भ्रम होत, मैं कबहुँ देखी न री,
 दुति कौ दुति लेखनी न कागत॥
 कोटि चंद तैं कहाँ दुराये री, नये-नये रागत।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत,
 काम की सांति न होइ, न होइ तृपति, रहाँ निस-दिन जागत॥
 लालजू की रिझवारता (35) [राग केदारौ]⁵
 ऐसी जिय होत, जो जिय सौं जिय मिलै,
 तन सौं तन समाइ लैहुँ, तौ देखौं कहा हो प्यारी।
 तौ ही सौं हिलगि, आँखिन सौं आँखें मिली रहैं,
 जीवत कौ यहै लहा हो प्यारी॥

मोकों इतौ साज कहाँ री प्यारी,
हैं अति दीन तुव बस, भुव-छेप न जाय सहा हो प्यारी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत, राखि लै री
बाहु-बल, हैं बपुरा काम-दहा हो प्यारी॥

लालजू की आसक्ति (36) [राग केदारौ]⁶

आजु रहसि मैं देखियत प्यारी जू,
एक बोल माँगों जो लिखि देहु।
साखी तेरे नैन-दसन-कच-कुच-
कटि-नितंब, जो लिखि देहु॥
प्रीति द्रव्य, रुचि ब्याज परस्पर,
मन-बच-क्रम जो लिखि देहु।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा प्यारी पै
बोल बुलाय लियौ लिखि देहु॥

लालजू के बचन प्रीयाजू ते (37) [राग केदारौ]⁷

प्यारी तेरी बाँफिन बान सु मार लागै,
भौहैं ज्यों धनुष।
एक ही बार यों छूटत,
जैसे बादर बरषत इंद्र अनख॥
और हथियार को गनै री,
चाहनि कनख।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी सौं,
प्यारी! जब तू बोलति चनख-चनख॥

प्रीयाजू के बचन (38) [राग केदारौ]⁸

काहे तैं आजु
अटपटे से हरि!
अटपटी पाग, अटपटे से बंद,
अटपटी देत आगें सरि॥

अटपटे पाँय परत में परखे,
 जब आवत हे इत ढरि।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम जानि हों पाये,
 आजु लाल औरें परि॥
 लालजू के बचन (39) [राग केदारौ]⁹
 काहे कौं मान करत,
 मोहिब कत दुख देत।
 बासे की सी दृष्टि लियें रहैं,
 तेरी जीवनि तोहि समेत॥
 अब कछु ऐसी करौ, जु भाँहनि
 टाटी जिनि देहु, कहत इतनेत।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
 छल कै गरैं लगाइ भई रमेत॥

लालजू की कृतज्ञता (40) [राग केदारौ]¹⁰
 रोंम-रोम रसना जो होती,
 तऊ तेरे गुन न बखाने जात।
 कहा कहाँ एक जीभ सखी री,
 बात की बात बात॥
 भानु स्रमित और ससि हू
 स्रमित भये, और जुबति-जात।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी,
 तू राखत प्राण जात॥
 लालजू के बचन (41) [राग केदारौ]¹¹
 तुव जस कोटि ब्रह्मांड बिराजै राधे।
 श्री सोभा बरनी न जाइ अगाधे॥

बहुतक जनम बिचारत ही गए साधे-साधे।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी!
ए दिन मैं क्रम-क्रम करि लाधे॥

सखी के बचन (42) [राग केदारौ]¹²

फूलीं सब सखी देखि-देखि।
जच्छ, किन्नर, नागलोक, देवस्त्री
रीझि रहीं भुव लेखि-लेखि॥
कहत परस्पर नारि नारि सौं,
यह सुंदरता अवरेखि रेखि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा,
ए कैसे हूँ चितये, परेखि रेखि॥

सखी के बचन प्रीयाजू ते (43) [राग केदारौ]¹³
पिय सौं तू जोई जोई करै, सोई छाजै।
और सैंध करै जो तेरी, सोई लाजै॥
तू सुरग्यान सब अंग सखी री, मान करत बे-काजै।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम, जिय में बसै, तू नित्त-नित्त बिराजै॥

सखी के प्रीयाजू मों बचन (44) [राग केदारौ]¹⁴

सोई तौ बचन मो सौं मानि,
तैं मेरौ लाल मोह्यौ री साँवरौ।
नव निकुंज सुख-पुंज महल में,
सुबस बसौ यह गाँवरौ॥
नव-नव लाड़ लड़ाइ लाड़िली,
नहिं-नहिं यह ब्रज जाँवरौ।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी पै
बारौंगी मालती भाँवरौ॥

प्रीयाजू ते सखी के बचन (45) [राग केदारौ]¹⁵

जो कछु कहत लाड़िलौ,
लाड़िली जू सुनियै कान दै।

जो जिय उपजै सो तिहारेई
हित की, कहत हौं आन दै॥

मोहिं न पत्याहु, तौ छाती
टकटोरि देखौ पान दै।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी
जाचक काँ दान दै॥

लालजू के बचन (46) [राग केदारौ]¹⁶

प्यारी जू! आगैं चलि, आगैं चलि,
गहवर बन भीतर जहाँ बोलै कोइल री।

अति ही विचित्र फूल-पत्रन की सेज्या रची,
रुचिर सँवारी तहाँ तूब सोइल री॥

छिन-छिन पल-पल तेरीऐ कहानी,
तुव मग जोइल री।

श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत
छबीलौ काम - रस भोइल री॥

सखी के बचन लालजू ते (47) [राग केदारौ]¹⁷
“ प्यारी अब सोइ गई।

ज्यौं-ज्यौं जगावत, त्यों-त्यों नहिं जागत,
प्रेम-रस पान करि भोइ गई॥

जागत होइ तौ जगाऊँ प्यारी, तातैंब परम सचु,
रस ही रसिक रस बोइ गई।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा उठिकैं गरें लगाई,
नवल प्रीति सौं नोइ गई॥

सखीन के परस्पर के बचन (48) [राग केदारौ]¹⁸

डोल झूलत दुलहिनी-दूलहु।
उड़त अबीर, कुमकुमा छिरकत,
खेल परस्पर सूलहु॥

बाजत ताल रबाब और बहु,
तरनी - तनया कूलहु।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी कौ
अनतब नाहिनै फूलहु॥

लालजू ते सखी के बचन (49) [राग केदारौ]¹⁹

प्यारी पहिरैं चूनरी।
तैसौई लँहगा बन्यौ सिलसिलौ, पूरनमासी की सी पूनरी॥
हों जु कहत चलियै मनमोहन, मानैगी न घूनरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी चरन लपटाने दुहँन री॥

प्रीयाजू सों लालजू के बचन (50) [राग केदारौ]²⁰

बनी री तेरें चारि-चारि चूरी करन।
कँठसिरी दुलरी हीरनि की,
नासा मुक्ता ढरनि॥

तैसौई नैनन कजरा फबि रह्यौ,
निरखि काम डरनि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा,
कुंजबिहारी रीझि-रीझि पग परनि॥

लालजू ते सखी के बचन (51) [राग केदारौ]²¹

प्यारी अब क्यों हूँ क्यों हूँ आई है।
इत तुम समित अधिक मनमोहन,
मैं कोटि जतन समझाई है॥

उत हठ करति बहुत नव नागरि,
 तैसीयै नई ठकुराई है।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कर जोरि, मौन है,
 दूबरे की राँधी खीर, कहौ कौन खाई है॥
 रास का पद सखी के बचन (52) [राग केदारौ]²²
 सुनि धुनि मुरली बन बाजै,
 हरि रास रच्यौ।
 कुंज-कुंज दुम बेलि प्रफुल्लित,
 मंडल कंचन मनिन खच्यौ॥
 नृत्तत जुगलकिसोर जुबति जन,
 मन मिलि राग केदारौ मच्यौ।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
 नीकैं री आजु प्यारौ लाल नँच्यौ॥

लालजू के बचन प्यारीजू ते (53) [राग कल्याण]¹
 जहाँ-जहाँ चरन परत प्यारी जू तेरे,
 तहाँ-तहाँ मन मेरौ करत फिरत परछाँही।
 बहुत मूरति मेरी चँवर दुरावति,
 कोऊ बीरी खवावति एकब आरसी लै जाहीं॥
 और सेवा बहुत भाँतिन की, जैसीयै कहैं कोऊ,
 तैसीयै करौं जो रुचि जानौं जाहीं।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौं
 भलैं मनावत दाइ उपाहीं॥

लालजू के बचन प्रीयाजू ते (54) [राग कल्याण]²
 यह कौन बात जु, अबही और,
 अबही और, अबही औरै।

देव-नारि, नाग-नारि और नारि तें
न होहिं और की औरै॥

पाछैं न सुनी, अब हूँ, आगै हूँ न है यह गति,
अद्भुत रूप की और की औरै।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी,
या रस ही बस भये, यह भई और की औरै॥

सखी सों सखी के बचन (55) [राग कल्याण]³

माई, ये बसीठ इनके, ये इनके,
और धौं को परै बीच।

हाथापाई करत जु सम भयौ,
अंग अरगजा की कीच॥

प्यारी जू के मुख-अंबुज कौ डहडहाट
ऐसौ लागत, ज्यों अधरामृत की सींच।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी के

राग रंग लटपटानि के भेद न्यारे-न्यारे,

जैसैं पानी में पानी नरीच॥

सखी सों सखी के बचन (56) [राग कल्याण]⁴

कस्तूरी कौ मर्दन अंग में कियैं,

मुरली धरैं, पीतांबर ओढ़ैं, कहत राधे हौं ही स्याम।

किसोर कुमकुम कौ सिंगार कीयें,

सारी चुरी खुभी, नेत्रनि दियैं स्याम॥

बाँह गहि लै चले, चलियै जू कुंज में,
 चितै मुख हँसैं, मानों एई स्याम।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
 छाती सों छाती लगायें गौर-स्याम॥
 लालजू के बचन प्यारीजू ते (57) [राग कल्याण]⁵
 प्यारी! तेरौ बदन-चंद देखैं,
 मेरे हृद-सरौवर तैं कमोदिनी फूली।
 मन के मनोरथ तरंग अपार,
 सुंदरता सहाँ गति भूली॥
 तेरौ कोप-ग्राह ग्रसैं लियैं जात, छुड़ायौ न छूटत,
 रह्यौ बुधि बल झूली।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा चरन-बनसी सौं
 काढ़ि रहे, लटपटाइ गही भुज-मूली॥

लालजू के बचन (58) [राग कल्याण]⁶
 प्यारी! तेरौ बदन कनक कोकनद,
 सम जल कन सोभा देत री।
 तामैं तिल, दृष्टि परत ही,
 मन हर लेत री॥
 उर तन जात पात प्राननि कौं,
 कटि सौं करि संकेत री।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा,
 कुंजबिहारी कहत अचेत री॥
 लालजू के बचन (59) [राग कल्याण]⁷
 बचन दै, मान न करौं।
 मन-बच-क्रम तीन हूँ तैं न टरौं॥

तेरेही कियें मान व्याप होत तन,
कहि कैसें कै भरीं।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी
कहत री प्यारी, कैसें कै लरीं॥

सखी सों सखी के बचन (60) [राग कल्याण]⁸
कुंजबिहारी नाँचत नीके,

लाड़िली नँचावति नीके।

औघर ताल धरें श्रीस्यामा, ताताथेई-
ताताथेई, बोलत संग पीके॥

तांडव-लास और अंग को गनैं,
जे-जे रुचि उपजति जी के।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कौ मेरु सरस
भयौ, और रस गुनी परे फीके॥

सखी सों सखी के बचन (61) [राग कल्याण]⁹

डोल झूलत बिहारी-बिहारनि,
राग रमि रह्यौ।

काहू के हाथ अधौटी, काहू के बीन,
काहू के मृदंग, कोऊ गहै तार,
काहू के अरगजा छिरकत रंग रह्यौ॥

डांडी छाँड़ै, खेल बढ़्यौ जु परस्पर,
नहिं जनियत पग क्यों रह्यौ।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी कौ

खेल खेलत काहू ना लह्यौ॥

लालजू प्रियाजू परस्पर (62) [राग कल्याण]¹⁰

हमारौ दान मार्यौ इनि।

रातिनि बेचि-बेचि जात, घेरौ सखा,

जान ज्यों न पावैं छियौ जिनि॥

देखौ हरि के ऊज उठाइवे की बात, रात-बिराति

बहू-बेटी काहू की निकसति है पुनि।

श्रीहरिदास के स्वामी की प्रकृति न फिरी,

छिया छाँड़ौ किनि॥

प्रीयाजू सों सखी के बचन (63) [राग कल्याण]¹¹

गुन-रूप भरी विधना सँवारी,

दुहँ कर कंकन एक-एक सोहै।

छूटे बार, गरैं पोति, दिपति मुख की जोति,

देखि-देखि रीझे तोहि प्रानपति,

नैन सलौनी मन मोहै॥

सब सखि निरखि थकित भई आली,

ज्यों-ज्यों प्रानप्यारौ तेरौ मुख जोहै।

रस-बस करि लीने श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा!

तेरी उपमा काँ कहि धों को है॥

सखी के बचन प्रीयाजू सों (64) [राग कल्याण]¹²

अजहूँ तू कहा कहति है री,

मारै नैन आरनि।

भौहँ ज्यों धनुष, चितवनि बान,

बाँफिनि फाँक धरैं, कहति स्याम प्यारनि॥

तू ही जीवनि, तू ही भूषनि,
 तू ही प्रानधन धारनि।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी सौं,
 मेरु भयौ री बिहारनि॥

प्यारीजू ते सखी के बचन (65) [राग सारंग]¹
 प्यारी, तू गुननि राइ सिरमौर।
 गति में गति उपजत नाना,
 राग-रागनी तार मंद्र सुर घोर॥
 काहू कछू लियौ रेख छाया,
 तौ कहा भयौ झूठी दौर।
 कहि श्रीहरिदास लेत प्यारी जू के तिरप,
 लागनि में किसोर॥

प्रीयाजू सौं लालजू के बचन (66) [राग सारंग]²
 प्यारी! तौपै कितौक संग्रह छबिन कौ
 अंग-अंग प्रति नाना भाइ दिखावति।
 हाथ किन्नरी मध्य सचु पाइ, सुलप राग-
 रागिनी सौं तू मिलि गावति॥
 कहा कहाँ एक जीभ, गुन अगनित,
 हारि पर्यौ कछू कहत न आवति।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी,
 कहत री प्यारी, तू जे-जे भाइ ल्यावति॥
 सखी सौं सखी के बचन (67) [राग सारंग]³
 परस्पर राग जम्यौ, समेत
 किन्नरी मृदंग सुर तार।

तीन हू सुरन के तान-बंधान,
 धुर - धुरपद अपार॥
 बिरस लेत धीरज न रह्यौ,
 तिरप-लाग-डाट सुर मोरनि सार।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा जे-जे अंग की गति लेति,
 अति निपुन अंग - अंगहार॥
 प्रियाजू सों सखी के बचन (68) [राग सारंग]⁴
 तोकों पिय बोलत है री,
 लाल ठाड़े कदंब तर।
 अबकैं ऐसौ ज्यौ कियै कहा होत है री,
 मारि रही कुसुम सर॥

कुंजबिहारी अपनौ अंस,
 तासों क्यों कीजै छदम वर।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा ढूँढत बन में,
 पाई क्रम-क्रम कर विषम डर॥
 प्रियाजू सों सखी के बचन (69) [राग सारंग]⁵
 चलियै छबीली, छबीलौ बोलत।
 आजु की बानिक पर तून टूटत है,
 कही न जाय कछु स्याम तोहि रत॥
 सखी लै चली मनाय,
 ज्यों हित की आई घत।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम बीच ही आइ मिले,
 तन की सुबास सकल भँवर कलमलत॥

प्रीयाजू सों पिय के बचन (70) [राग सारंग]⁶
बैनी गूँथि कहा कोउ जानै

मेरी सी, तेरी सौं।
बिच-बिच फूल सेत-पीत-राते,
को करि सकै एरी सौं॥

बैठे रसिक सँवारन बारन,
कोमल कर ककही सौं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा नख सिख लौं बनाई,
दै काजर नख ही सौं॥

लालजू के बचन (71) [राग सारंग]⁷
प्यारी! तेरी पुतरी काजर हू तैं कारी,
मानौ द्वै भँवर उड़े री बराबरि।
चंपे की डार बैठे कुंद अलि,
लागी है जेब अराअरि॥

जब आन घेरत कटक काम कौ,
तब जिय होत डराडरि।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
दोउ मिलि लरत झराझरि॥

सखी के बचन (72) [राग सारंग]⁸
स्यामकिसोर जू! तुमकों दोऊ
रंग रंगित, पीतांबर चूनरी।
ऐसौ रूप कहाँ तुम पायौ,
अहरनिसि सोच उधेराबूनरी॥
मनमोहन सुरज्ञान सिरोमनि,
सब अंगनि अंग कोक निपूनरी।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम तुम्हारी विचित्र ताई,
प्रेम सौं पाईयत रस सूनरी॥

लालजू सों प्यारीजू के बचन (73) [राग सारंग]⁹

चौकी कहाँ बदलि परी हो, प्यारे हरि!

लाल पाट की हुती,
जंगाली ल्याए बरि॥

वह तौ हुती हीरनि खचित, पै यह दुरंग पन्ना,
लालहि मिलि लैहैं लरि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी
की चतुराई रही भरि॥

प्यारीजू के बचन (74) [राग सारंग]¹⁰

आउ लाल, ऐसैं मद पीजै,
तेरौ झगा मेरी अँगिया धरि।

कुच की सुराही, नैननि के प्याले,
दारू द्यौंगी यौं अंकाँ भरि॥

अधरनि च्वाड़ लेउ सब रस,

तनिकौ न जान देउ इत-उत ढरि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की
सुहबति असर, जहाँ आपुन हरि॥

सखी सों सखी के बचन (75) [राग सारंग]¹¹

डोल झूलत बिहारी-बिहारिनि
पुहुप - बृष्टि होति।

सुर पुर, पुर गंधर्व और पुर, तिनकी नारि देखति,
बारति लर मोति॥

घेरा करति परस्पर सब मिलि,
कहूँ न देखी ऐसी जुबती जोति।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारिनि
सादा चुरी खुभी पोति॥

लालजू के बचन (76) [राग विभास]¹

प्यारी जू! बोलति नहीं, कै तू सूता उनींदी,

किधौं काहू कछु कह्यौ, कै तेरौ ऐसौई सुभाव।

मोहि तेरे देखे बिन कल न परै,

कै तू छाँड़ि कुभाव॥

काहू की झुक हमें देति री,

उपजत दुभाव।

श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत,

ताके बस परे प्रगटत जु भाव॥

लालजू के बचन (77) [राग विभास]²

आलस भीजे री नैन,

जँभाति आछी भाँति सुदेस।

कर सौं कर टेक अँगुरिन पेच, मानौं ससि-

मंडल बैठ्यौ अति भाँति सुदेस॥

मन के हरिबे कौं और सुख नाहिंनैं कोऊ,

प्यारी! नख-सिख भाँति सुदेस।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,

छाती सौं छाती लगाएँ अंग-अंग सुदेस॥

लालजू के बचन (78) [राग विभास]³

प्यारी जू! एक बात कौ मोहि डर आवत है री,

मति कबहूँ कुमया करि जाति।

पल पल हित बंछत हौं री, मति परै भाँति॥

यह सचु ऐसैंई रहौ री,

जिनि टरौ तेरी घाति।

श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत,

यौं बाढ़ौ ज्यौं पुरइनि-जल की रीति,

तोहि लौं साँति॥

लालजू के बचन (79) [राग विभास]⁴

प्यारी जू! हम तुम दोऊ एक कुंज के सखा,

रूठें क्यों बनै।

इहाँ कोऊ हितू मेरौ न तेरौ,

जो यह पीर जनै॥

हैं तेरौ बसीठ, तू मेरौ,

और न बीच सनै।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी

कहत प्रीति पनै॥

लालजू के बचन (80) [राग विभास]⁵

चूनरी में जाड़ौ लागत है री,

कीजियै सुख - सैन।

घरी-घरी कै रूसनै, पहर मनावत जाइ,

मीठे - मीठे बैन॥

उठि सदकैं बलाइ लेहुँ,

प्रकृति यौं न चाहियै, चाहियै ज्यों मैं।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी

लपटाइ रहे, मानि सबै सुख चैन॥

सखी सों सखी के बचन (81) [राग विभास]⁶

दुहुनि की सहज बिसाँति,

दोऊ मिलि सतरंज खेलत।

उर रुख, नैन चपल अस्व,

चतुर बराबर झेलत॥

आतुरता फील, पयादे निग्रह,

फरजी चौंप अनूपम पेलत।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,

सह साह राखैं खेलत॥

लालजू के बचन (82) [राग विभास]⁷
 होड़ परी मोरनि अरु स्यामहिं।
 आवहु मिलहु मध्य सचु की गति,
 लैहिं रंग धौं कामहिं॥

हमारे-तुम्हारे मध्यस्थ राधे,
 और जाहि बंदौ बूझि देखौ, तृन दै कहा है यामहिं।
 श्रीहरिदास के स्वामी कौ चौपरि कौ सो खेल,
 इकगुन-दुगुन-त्रिगुन-चतुरगुन री जाके नामहिं॥

✓ प्यारीजू के बचन अपने मन ते (83) [राग विभास]⁸
 कहौ यह का की बेटी, कहौ धौं,
 कहा है कुँवरि कौ नाँउ।
 तुम सब रहौ री, हौं ही ऊतर दै हौं,
 चले किन जाहु ढोटा! बाइ बावरौ गाँउ॥

✓ सब सखि मिलि छिरका जु खेलन लागीं,
 तौलौं तुम रहौ री, जौलौं हौं न्हाँउ।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा, कुंजबिहारी
 लै बुड़की गरें लागि, चौंकि परी कहाँ हौं जाँउ॥

सखी सों सखी के बचन (84) [राग विभास]⁹
 एक समै एकांत बन में,
 डोल झूलत कुंजबिहारी।
 झोटा देत परस्पर सब मिलि,
 अबीर उड़ावत डारी॥
 कबहुँक वे उनकें, वे उनकें,
 हौं दुहुनि की इक सारी।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
 बाढ्यौ रंग भारी॥

सखी सों सखी के बचन (85) [राग विभास]¹⁰

कुंज-कुंज डोलनि, मृदु बोलनि,

टूटी लर, छूटी पोति, अति छबि लागत।

भँवर गुंजार करत संग डोलत,

मानौं मेरु रागिनी के संग लियें रागत॥

जूथ अनेक सुघर जुबतिनि के,

तुम्हरी रीझि पलब नहिं लागत।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी पर

तन-मन-धन न्यौछावरि करौं कागति॥

प्रातः सखी के बचन (86) [राग बिलावल]¹¹

प्रिया-पिय के उठिबे की छबि

बरनी न जाइ, सब तें न्यारे।

मानहु द्यौस-रैनि इकठौरे सोए,

न भये न्यारे॥

बार लटपटे, मानो भँवर जूथ लरत परस्पर,

कमल-दलनि पर खंजरीट सोभा न्यारे।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी-

बिहारिन पर, कोटि-कोटि अनंग,

कोटि ब्रह्मांड बारि किये न्यारे॥

प्रातः सखी के बचन (87) [राग बिलावल]¹²

स्यामा स्याम आवत कुंजमहल तें,

रँगमगे रँगमगे।

मरगजी बनमाल, सिथिल कटि-किंकिनी,

अरुन नैन चारौ जाम जगे॥

सब सखी सुघराई गावत, बीन बजावत,

सब सुख मिलि संगीत पगे।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी की

कटाछि सों कोटि काम दगे॥

श्रीहरिदासजू के बचन (88) [राग मलार]¹

हिंडोरेंब झूलत लाल दिन दूलह,
दुलहिन बिहारिनि, देखौ री ललना।

गौर-स्याम छवि अति दुति,
बहु भाँति री बलना॥

नीलांबर-पीतांबर अंचल चलत,
धुजा फहराति कलना।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी-बिहारिनि अविचलना॥

सखी सों सखी के बचन (89) [राग मलार]²

ऐसी रितु सदा सर्वदा
जो रहै बोलति मोरनि।

नीके बादर, नीके धनुष, चहुँ दिसि नीकौ श्रीवृंदावन,
आछी नीकी मेघनि की घोरनि॥

आछी नीकी भूमि हरी-हरी, आछी नीकी
बूढ़नि की रँगनि, काम किरोरनि।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा के मिलि गावत,
राग मलार जम्यौ किसोर-किसोरनि॥

प्रियाजू सों लालजू के बचन (90) [राग मलार]³

सु बोल बोलियै जू, मान न करि हौं,
आये दिन पावस के सचु के।

घरी-घरी के रूसनैं क्याँ बनै,
ते बोल बोलियै जू मन-क्रम-बच के॥

भयौ है बंधान बहुत जतननि करि,
बिसरे गुन गस के।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा
कुंजबिहारी प्यारी बस के॥

सखी सों सखी के बचन (91) [राग मलार]⁴

यह अचरज देख्यौ न सुन्यौ कहूँ,

नवीन मेघ संग बीजुरी एक रस।

तामैं मौज उठति अधिक,

बहु भाँति लस॥

मन के देखिबे काँ और सुख नाहिँनै,

चितवत चितहिं जु करत बस।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी

बिहारिन जू कौ पवित्र जस॥

पिय के बचन प्रियाजू सों (92)

[राग मलार]⁵

✓ बूँदें सुहावनी री लागतिं,

मति भीजै तेरी चूनरी।

मोहि दै उतारि, धरि राखौं

बगल में, तू न री॥

लागि लपटाइ रहैं छाती सौं छाती,

जो न आवै तोहि बौछार की फूनरी।

श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत,

बीजुरी कौंधै, करि हाँ, हूँ न री॥

सखी सों सखी के बचन (93)

[राग मलार]⁶

भीजन लागे री दोऊ जन।

अँचरा की ओट करत दोऊ जन॥

अति उनमत्त रहत निसि-बासर,

राग ही के रंग रँगो दोऊ जन।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,

प्रेम परस्पर नृत्य करत दोऊ जन॥

सखी सों सखी के बचन (94) [राग मलार]⁷

नदित मन मृदंगी, रास भूमि सुकांति,
अभिनै सु नव गति त्रिभंगी।

धापि राधा, नटति ललिता, रसवती नागरी
गाइतेग्रनाभि तान तुंगी॥

रसद बिहारी बंदे, बल्लभा राधिका,
निस - दिन रंग रंगी।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-
कुंजबिहारी संगीत संगी॥

सखी के बचन (95) [राग मलार]⁸

दामिनि कहत मेघ सों हमारी उपमा दैहिं ते झूठे,
एई मेघ एई बीजुरी साँची।

जिन-जिन हमारी उपमा दीनी,
तिन-तिन की मति काँची॥

ऐसी कहूँ सुनी जु बूँद तैं कन न्यारौ,
ता पटतर क्यों दीजै समुद्र राँची।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी की
अटल-अटल प्रीति माँची॥

सखी सों सखी के बचन (96) [राग गौड़ मलार]¹

नाँचत मोरनि संग स्याम,
मुदित स्यामाहिं रिझावत।

तैसियै कोकिला अलापत, पपीहा देत सुर,
तैसेई मेघ गरजि मृदंग बजावत॥

तैसियै स्याम घटा निसि-सी कारी,
तैसियै दामिनी कौंधि दीप दिखावत।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी,
रीझि राधे हँसि कंठ लगावत॥

सखी के बचन प्रीयाजू सों (97) [राग गौड़ मलार]²
हरि के अंग कौ चंदन लपटानों,

तन तेरें देखियत जैसें पीत चोली।
मरगजे अभरन बदन छिपावति,
छिपै न छिपायें मानों कृष्ण बोली॥

कहूँ अंजन कहूँ अलक रही खसि,
सुरति रंग की पोटेँ खोली।
श्रीहरिदास के स्वामी स्याम मिलत बिहारिन,
हार न रह्यौ कंठ बिच ओली॥

सखी की बोलनि (98) [राग बसंत]¹
कुच गडुवा, जौबन मौर,
कंचुकी बसन ढाँपि लै राख्यौ बसंत।
गुन मंदिर, रूप बगीचा में बैठी है,
मुख लसंत॥

कोटि काम लावन्य बिहारी,
जाहि देखत सब दुख नसंत।
ऐसे रसिक श्रीहरिदास के स्वामी,
तिनकाँ भरन आई मिलि हसंत॥

सखी के बचन (99) [राग बसंत]²
कुंजबिहारी कौ बसंत सखि,
चलहु न देखन जाहि।
नव बन, नव निकुंज, नव पल्लव,
नव जुवतिन मिलि माँहि॥

बंसी सरस मधुर धुनि सुनियत,
फूली अंग न माँहि।
सुनि श्रीहरिदास प्रेम सों प्रेमहिं
छिरकत छैल छुवाँहि॥

लालजू के बचन (100) [राग बसंत]³

चलि री, भीर तैं न्यारेई खेलैं।

कुंज-निकुंज मंजु में झेलैं॥

पंछिन सहित सखी न संग कोऊ,

तिहिं बन चलि मिलि केलैं।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा,

प्रेम परस्पर बूका-बंदन मेलैं॥

लालजू के बचन (101) [राग बसंत]⁴

अब कैं बसंत न्यारेई खेलैं,

काहू सौं न मिलि खेलैं, तेरी सौं।

दुचिते भएँ कछू न सचु पईयत,

तू काहू सखी सौं मिलि न, मेरी सौं॥

देखैगी जु रंग उपजैगौ परस्पर,

राग-रागिनीन के फेराफेरी सौं।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,

राग ही में रंग उपजैगौ एरी सौं॥

प्रीयाजू के बचन (102) [राग बसंत]⁵

रहौ-रहौ बिहारी जू, मेरी आँखिन में बूका मेलत हौ,

कित अंतर होत मुख अवलोकन कौं।

और भाँवती तिहारी मिल्यौ चाहत मिसि कैं,

पैयाँ लागौं पन-पन कौं॥

गावत खेलत जो सुख उपजत,

सु तौ कोटि बर है तन कौं।

श्रीहरिदास के स्वामी कौ मिलत खेलत कौ सुख,

कहाँ पाईयत ऐसौ सुख मन कौं॥

श्रीहरिदासजू के बचन (103) [राग गौरी]¹
साँधें न्हाइ बैठी, पहिर पट सुंदर,

जहाँ फुलवारी तहाँ सुखवति अलकैं।
कर नख सोभा कल केस सँवारति,
मानों नव घन में उड़गन झलकैं॥

बिबिध सिंगार लियें आगें ठाड़ी प्रिय सखी,
भयौ भरुआनि रतिपति दल दलकैं।
श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी की छबि
निरखत लागत नाहीं पलकैं॥

सखी की ओलनि (104) [राग गौरी]²
चलि सखी, कुंजबिहारी साँ मिलि,
चित दै देखैं उनकी भाँवती।

सुंदर साँ सुंदरि मिलि खेलत,
कैसेँ धौँ गाँवती॥

औचक आइ परी सखी,
तहाँ पिय पै पाँइ चँपावती।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी साँ
मिलि पौढ़ी, तन मन राँवती॥

सखी साँ सखी के बचन (105) [राग गौरी]³
राधा रसिक कुंजबिहारी खेलत फागु,

सब जुवती जन कहत हो-हो होरी।
भरत परस्पर, काहू की काहू न सुधि,
हँसिकैं मन हरत मोहन गोरी॥
कर साँ करब जोरि, कटि साँ कटिब मोरि,

करत नृत्य काहू न रुचि थोरी।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा

फिरत न्यारेई न्यारे, सब सखियन की

दृष्टि बचावत तकि तब खोरी॥

सखी के बचन सखी सों (106) [राग गौरी]⁴

नव निकुंज गृह नवल आगैं,

नवल बीन मध्य राग गौरी ठटी।

मनों दस इंदु पीयूष बरषत सुखद,

चपल करजावली दृष्टि पिय की जटी॥

रीझि-रीझि पिय देत भूषन, दाम, उर,

रसन दसननि धरत, निरखि सारंग-कटी।

रसद श्रीहरिदास बिहारी अंग-अंग मिलत,

अतन उदोत करत सुरति आरंभटी॥

सखी के बचन (107) [राग गौरी]⁵

झूलत डोल दोऊ जन ठढ़े।

हाँघत जोर सहित जैसौ

जाकें डाँड़ीब गहैं गाढ़े॥

बिच-बिच प्रीति रहसि रस-रीति की,

राग-रागिनीन के जूथ बाढ़े।

श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,

राग ही के रंग रँगि काढ़े॥

सखी के बचन (108) [राग गौरी]⁶

झूलत डोल श्रीकुंजबिहारी।

दूसरी ओर रसिक राधावर

नागरि नवल दुलारी॥

राखैं न रहत हँसत कह-कह प्रिया,
 बिलबिलात पिय भारी।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्याम कहत री प्यारी,
 अबकैं राखि हा-हा री॥
 प्रियाजू सों लालजू के बचन (109) [राग नट]¹
 कौन प्रकृति तिहारी छिया,
 तुमहिं मिलत बेगि भोर है जात।
 अथवत निमेष होइ पह फाटी,
 देखियत पहली सह मात है जात॥
 आवत जात भारौ परै,
 पीतौ मरि जात।
 श्रीहरिदास के स्वामी तुम्हारे माथैं,
 तृन कितौक सुख जात॥

सखी सों सखी के बचन (110) [राग नट]²
 जुग कवनी बैस किसोर दोऊ,
 निकसि ठाढ़े भए सघन बन तैं।
 तन-तन में बसत, मन-मन में लसत,
 सोभा बाढ़ी दुहुँ दिसि, मानों प्रगट भई दामिनि घन घन तैं॥
 मोहन गहर गंभीर बदत, पिक बानी उपजत
 मानों प्रिया के बचन तैं।
 श्रीहरिदास के स्वामी स्यामा-कुंजबिहारी,
 ऐसौ को, जाकौ मन लागै अनत मतैं॥
 श्री स्वामी हरिदास की बाणी फल कौ स्वाद।
 तासु बंश खग पात रस उपजत उर अह्लाद॥

श्रीस्वामी बीठलविपुलदेवजू की वाणी

(1) [राग विभास]¹

प्रात समै आवत जु आलस भरे,
जुगलकिसोर देखे कुंजन की खोरी।
लटपटी पाग, छुटे बंद पिय के,
प्रिया (जू) की बैनी बिथुरी, छूटी कच डोरी॥
ललितादिक देखत जु नैन भरि,
अति अद्भुत सुंदर वर जोरी।
श्रीबीठलविपुल पुहुप बरसत नभ,
तून टूटत अब हो हो होरी॥

(2) [राग विभास]²

आजु बनी लाड़िली
प्रीतम संग आवति।
सौं धै भीजी, लट छूटी, पिय के अंस भुज,
पाछें सखी सुघर विभासहिं गावति॥
श्रम-जल बिंदु निसि के सुख सूचत,
मोहन वदन सौं वदन मिलावति।
श्रीबीठलविपुल कल रसिक बिहारी लाल,
आनंद-समुद्र मथि मदन झिलावति॥

(3) [राग विभास]³

आई भोर भयें प्यारी,
छूटी लट बगरी।
बाँहाँ जोरी लाल संग, निसि किये कुंज रंग,
सुबस किये बिहारी कुँवरि अचगरी॥

निसि के चिह्न फबे गौर-स्याम तन,
छबि पद-नख पर वारों जेती केती नगरी।
श्रीबीठलबिपुल केलि, मनहुँ कंचन बेलि,
अरुझी स्याम-तमाल आवै कुंज डगरी॥

(4) [राग विभास]⁴

प्यारी तेरी चाल,
चितवनि बाँकी।
बाँके बसन, - आभरन बाँके,
बंक रेख उर आँकी॥
बंक सुभाव, मिलन बाँकी प्रिया,
बंक कोर चख झाँकी।
श्रीबीठलबिपुल बिहारी बाँके मिले,
तातैं तू फिरत निसाँकी॥

(5) [राग भैरों]¹

प्रातहीं किसोर जोरि कुंज - केलिनी।
अंग-अंग गुन-तरंग, गौर-स्याम रूप-रासि,
मदन-केलि-सुरति-सिन्धु पुलकि झेलिनी॥
तरनि-नंदिनी सुतीर, गावत पिक भृंग कीर,
त्रिगुन मरुत माधुरी श्रमंबु पेलिनी।
वर बिहार राजिनी, सु नूपुरादि बाजिनी,
श्रीबीठलबिपुल वारनैं भुज-कंठ-मेलिनी॥

(6) [राग विलावल]¹

लालहि बस-करनी, मदन-मद-हरनी,
मल्हकि पग-धरनी, उरज उदित री।
हेमलता की फरनी, श्रम-जल की झरनी,
निकट सुता तरनी, बदन मुदित री॥

रूप-सुधा की भरनी, मोपै क्यों आवै बरनी,
 पिय टकटरनी, तृषित छुधित री।
 रस बस कै बरनी, बिपुल प्रेम-परनी,
 श्रीबीठल कुंज घरनी, बिहारी बुधित री॥

(7) [राग विलावल]²

✓ प्रिया स्याम संग जागी हैं।
 सोभित कनक कपोल-ओप पर,
 दसन-छाप छबि लागी है॥
 अधरनि रंग, छुटी अलकावलि,
 सुरति-रंग अनुरागी है।
 श्रीबीठलबिपुल कुंज की क्रीड़ा,
 काम-केलि-रस पागी है॥

(8) [राग विलावल]³
 रसिक रसीली, भाँति छबीली,
 नैन रंगीली तू पिय पै तैं आई।
 अलक-कंचुकी छूटी, चारि-चारि चूरी टूटी,
 आलस मदन लूटी, लेति जँभाई॥

कहा रही मुख मोरि, नागरि नव किसोरि,
 तृन टूटत हो हो होरी ललन बनाई।
 श्रीबीठलबिपुल बेष, उर बनी नख-रेख,
 रजनी के अवसेष जानि मैं पाई॥

(9) [राग विलावल]⁴

स्यामा चलहु लड़ैती प्रिया,
 कुंजनि करहु केलि।
 स्याम तमाल लाल, नवल किसोरी बाल,
 तुम जु नवल नव कनक बेलि॥

बिबिध कुसुम घन, रचित श्रीवृन्दावन,
 बोलत सुहाये पिक मधुप रहे री झेलि।
 श्रीबीठलबिपुल रस बिहारी तिहारे बस,
 जमुना के तीर सुख बिसद बिलास खेलि॥

(10) [राग विलावल]⁵

आवत लाड़िली लाल फूले।
 कुंज केलि नवरंग बिहारी, सुरति हिंडोरें झूले॥
 निसि जागे अलसात रँगमगे, पट पलटे गति भूले।
 श्रीबीठलबिपुल पुलकि ललितादिक, दिन देखति द्रुम मूले॥

(11) [राग विलावल]⁶

आवनि कुंज तैं पह पीरी।
 प्रिया जँभाति कर जोरि रसमसी,
 ललन खवावत बीरी॥

सुरति श्रमित अँग-अँग सिथिल अति,
 भुज भरि स्याम रसीरी।
 श्रीबीठलबिपुल बिनोद करत मिलि,
 नहिं ललितादिक नीरी॥

(12) [राग विलावल]⁷

सुनहु रसिक श्रीवृन्दावन कौ जस।
 कुंज केलि मानिनी मनोहर,
 परबस भये नाहिंनैं अपने बस॥
 इह बन नित्य नवीन जुगलवर,
 द्रुम-दल दिव्य श्रवत सलिता लस।
 श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी कौ,
 पान कियौ चाहत रसना रस॥

(13) [राग बसन्त]¹

सजनी, नव निकुंज द्रुम फूले।
अलि-कुल संकुल करत कुलाहल, सौरभ मनमथ मूले॥
हरषि हिंडोरैं रसिकराइ वर, जुगल परस्पर झूले।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद देखि नभ, देव विमाननि भूल॥

(14) [राग बसन्त]²

जुगलकिसोर मेरे कुंजबिहारी प्यारी,
वन बिहार बिहरत नवरंगा।
अरुन हरित मुकुलित द्रुम पल्लव,
अलि-कुल गुंज अनंग-तरंगा॥
सौंधैं बहुत अबीर अरगजा,
खेल परस्पर छिरकत अंगा।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद रीति रस,
सुख देखति ललितादिक संग॥

(15) [राग सारंग]¹

डोल झूलैं
स्यामा स्याम सहेली।
नव निकुंज नवरंग पीय संग,
बिहरत गर्व गहेली॥
कबहुँक प्रीतम रमकि झुलावत,
कबहुँ प्रिया नवेली।
श्रीबीठलबिपुल पुलकि ललितादिक,
देखत आनंद केली॥

(16) [राग सारंग]²

रस बस होत लाल,
प्यारी तेरी वदन झलक।
अपने सहज सुभाइ की माधुरी बनी है,
ललाट पर पतरी अलक॥

कौनहूँ भाँति चितवनि चितयौ,
तब तैं मोहन जू की लागैं न पलक।
श्रीबीठलबिपुल बिहारी सौं हिलि मिलि,
जैसैं बाढ़ै छिन-छिन मदन ललक॥

(17) [राग सारंग]³

तैं मोह्यौ प्यारी मेरौ लाल।
जिहिं गुन सर्वसु चोरि लियौ नागरि; ते गुन अब प्रतिपाल॥
तैं कछु प्रेम ठगौरी मेली, तुव मुख जोवत नैन विसाल।
भामिनि कनक लता है लपटी, श्रीबीठलबिपुल उ स्याम तमाल॥

(18) [राग सारंग]⁴

प्यारी, नैंकु निरखौ नवरंग लालै।
तुव पद-पंकज-तल-रज वंदत, तिलक बनावत भालै॥
तेरे बरन बसन आभूषन, उ धरि चम्पक मालै।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद करहु मिलि, भुज भरि बाहु बिसालै॥

✓ (19) [राग सारंग]⁵
लालन तेरे ही आधीन।

सुनि री सखी, हौं साँच कहति हौं, तू जल (है) ये मीन॥
तेरे रस बस स्यामसुंदर वर, जाचत (है) ज्यों दीन।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी, होत मनावत लीन॥

(20) [राग सारंग]⁶

✓ लाल करत तेरे गुन गानैं।
जो न पत्याहु सपत नहिं मानति, चलि सुनि अपने कानैं॥
जो तुम स्याम होहु वे स्यामा, तौ यह वेदन जानैं।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी सौं, बादि रूसनौं ठानैं॥

(21) [राग सारंग]⁷

प्रिया पाउ धारियै पिय पहियाँ।
कुंज-भवन के द्वारे ठाढ़े, कुँवर कदंब की छहियाँ॥

सुनत बचन हँसि बिलम न कीनों, चली अली गहि बहियाँ।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी, लाइ लई उर महियाँ॥

(22) [राग सारंग]⁸

✓ मेरौ लाल रँगिलौ रंग भर्यौ।
जो भावै सो करहु किसोरी, मोहन तेरे बस पर्यौ॥
जमुना पुलिन निकुंज भवन में, सर्वसु सँचि तोकाँ धर्यौ।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी, सुगुन गाँठि दै वर वर्यौ॥

(23) [राग सारंग]⁹

✓ नैना प्रगटि करत पिय प्रेमैं।
झूठैं ही ऊतर कत ठानति, छाँड़ि मानि के नेमैं॥
कोप कपट कौ अधर कंप सखि, अतिहि हुलास हृदैं मैं।
श्रीबीठलबिपुल बिहारी नग बर, जटित सु तुव तन हेमैं॥

(24) [राग सारंग]¹⁰
✓ प्यारी, तेरे नैना री अति बाँके।

ललित त्रिभंगि बिहारी नागर, तैं अपने करि आँके॥
कहि धौं कुँवरि किसोरी कोक गुन, सिखये इनहिं कहाँ के।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी पिय प्राननि में ढाँके॥

(25) [राग सारंग]¹¹

✓ प्यारी, तेरे नैनन पर तृन टूटत।

मानौं कुंद कली पर भौरा हित अमृत रस घूँटत॥
कहा री कहाँ इन बान विसेषे, इत लागत उत फूँटत।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारिनि, पिय कौ सर्वसु लूँटत॥

(26) [राग मलार]¹

✓ हमारें माई स्यामा जू कौ राज। 11431
जाके सदा अधीन साँवरौ, या ब्रज कौ सिरताज।।
यह जोरी अविचल वृंदावन, नाहिं आन सौं काज।
श्रीबीठलबिपुल बिहारिनि के बल, दिन जलधर संग गाज।।

(27) [राग मलार]²

जमुना तट स्याम घटनि की पाँति।
हरित भूमि बन हरित सिखंडी,
बोलत अति रस माँति।।

सुरंग चूनरी की छबि दुलहिनि,
अभरन नाना भाँति।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी सौं,
मिलि बिलसत किलकाँति।।

(28) [राग मलार]³

नीके द्रुम फूले फूल, सुभग कालिंदी-कूल,
इंद्र-धनुष राजैं, स्याम घटनि में।
नीके गृह लता कुंज, नीकी आली, अलि गुंज
नीकौ राग रमि रह्यौ, पिकनि की रटनि में।।
नीकी गति मंद-मंद, बिहारी आनंदकंद,
नीकौ भेद बन्यौ, अरुन पीत पटनि में।
श्रीबीठलबिपुल रंग, ललिता के फूले अंग,
* मिले तैं देखौंगी नैन, नीकी बिधि छटनि में।।

(29) [राग कल्याण]¹

नव निकुंज मंदिर में प्यारी,
पियहिं सिखावति बीना।
तान बंधान कल्याण मनोहर,
इत मन देहु प्रबीना।।

लेत सँभारि-सँभारि सुघर वर,
 नागरि कहति फबी ना।
 श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी कौ,
 जानत भेद कवी ना॥

(30) [राग कान्हारौ]¹

हैं तेरे वारनैं,
 मंद गति चलि, पिय सौंहीं।
 मेरे पाछैं दुरि-मुरि, नीलांबर ओढ़ि सखी,
 अबहीं मिलऊँ लालहिं, गुप्त की गौंहीं॥
 आतुर है आवैंगे, तब न बनैगी,
 मेरौ कह्यौ मानि, प्यारी, कहति हौं तो हीं।
 श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी सौं,
 हिलि-मिलि कै, तेरौ ज्यौ जानै, कै हौं हीं॥

(31) [राग कान्हारौ]²
 मिलि खेलि मोहन सौं
 करि मन भायौ।

कुंजबिहारी लाल रस-बस बिलसत,
 मेरे तन मन फूल अपनौ करि पायौ॥
 तुम दिन दुलहिनि, ए दिन दूलहु,
 सघन लता-गृह मंडप छायौ।
 कोकिल-मधुप-गन, परैंगी भाँवरि तहाँ,
 श्रीबीठलबिपुल मेघ मृदंग बजायौ॥

(32) [राग केदारौ]¹

बिलसत प्यारी - लाल कुंज रजनी।
 वदन-वदन जोरैं, मदन लड़ावत,
 नूपुर के सुर मिलि, बलया की बजनी॥

पुलकि-पुलकि तन, आनंद मगन मन,
 मधुरे वचन, श्रवन सुनि सजनी।
 श्रीबीठलबिपुल रस, रसिक बिहारी बस,
 नव त्रिया-तिलक, सुरति जीति गजनी॥

(33) [राग केदारौ]²

तेरे नूपुर धुनि री प्यारी, श्रवन सुनी।
 अचल चले, चल रहे री रहित गति,
 खग-मृग व्रत मानों धर्यौ है मुनी॥
 नव निकुंज वर, सुहस्त सँवार्यौ लाल,
 सेज्या रचित, बहु कुसुम चुनि चुनी।
 श्रीबीठलबिपुल की रीति, मिली है मदन जीति,
 तू सिरमौर सब गुननि गुनी॥

(34) [राग केदारौ]³
 जिन रूठौ, लागौं तिय पैयाँ।

तेरे तन की सोभा सुंदरि, मेरे उर लागति है झैयाँ॥
 तन-मन वारौं एक रोम पर, मेरौ मन लाग्यौ तौ तैयाँ।
 श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी, संभ्रम गयौ, लाइ उर लैयाँ॥

(35) [राग केदारौ]⁴
 नव बन नव निकुंज नव बाला।

नव रंग रसिक रसीलौ मोहन,
 विलसत कुंजबिहारी लाला॥
 नव मराल जित, अवनि धरत पग,
 कूजित नूपुर किंकिनि जाला।
 श्रीबीठलबिपुल बिहारी के उर,
 यौं राजत जैसैं चंपे की माला॥

(36) [राग केदारौ]⁵

नव निकुंज नव भूमि रँगमगी।

नवल बिहारी लाल लाड़िलौ,

नवल सरद की जौन्ह जगमगी॥

नव सत साजि सकल अंग सुंदरि,

नवल बदन पर अलक सगबगी।

श्रीबीठलबिपुल बिहारी के अंग,

लाड़ति लाड़िली सहज उर लगी॥

(37) [राग केदारौ]⁶

रसिक लाल के अंग संग,

सुख सेज पौढ़ी भामिनी।

सुरति रंग वर चपल अंग-अंग,

लज्जित नव घन दामिनी॥

सुंदरता की रासि किसोरी,

नहिं उपमा कौं कामिनी।

श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी सौं,

इहि रस विलसत जामिनी॥

(38) [राग केदारौ]⁷

हठ करि रही प्रिया, बातों न कहई।

ललिता, तू समुझाइ जुगति-

करि, जैसें रस रहई॥

तन-मन वारों एक रोम पर,

जो नैंक इतै चितई।

श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी, कहत सखी सौं,

करि जतन, ज्यों जस रहई॥

(39) [राग केदारौ]⁸

✓ बदी पिय आजु प्रिया सौं होड़।
उमँगि-उमँगि सुर-भेद मिलावत, नव निकुंज वर कोड़।।
कर तारी दै कहति लाड़िली, हारे कुँवर निरोड़।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारी, जीती है कुँवरिब छोड़।।

(40) [राग केदारौ]⁹

✓ प्रिया पीतांबर मुरली जीती।
हा-हा करत, न देत लाड़िली, चरन लुठत निसि बीती।।
राखौ याहि दुराड़ सखी, ललितादिक रहौ सचीती।
श्रीबीठलबिपुल बिनोद बिहारिनि, प्रगट करत रस-रीती।।
।। इति श्रीबीठलबिपुल देवजू की बाणी सम्पूर्ण।।



श्रीस्वामी बिहारिनदेवजी का पद (सहेली)

ताल-कहरवा [राग गौरी]

सहेली, मेरौ लालबिहारी ऐसौ रँगमग्यौ
(जै) श्रीवृन्दाबन कौ री चंद।
जाक्रे दरस परस सुख पाइये,
मन उपजत अति आनंद।।1।।
नखसिख रसिक सु रस भर्यो,
मो प्रानप्रिया के रंग।
मो बिनु नैकु न रहि सकै,
बिहरत अनुराग अभंग।।2।।

अवधि प्रेम की साँवरो,
 मिलि करत नई नित केलि।
 या रस तैं नैकु न टरैं,
 हम दोऊ नवल-नवेलि॥३॥
 तोतैं कछु न दुराइहीं सखि,
 तू मेरे हित प्रान।
 तैं मेरे रस बस कियौ,
 बर सुंदर सुघर सुजान॥४॥
 तोहि सुन्यौ भावत भटू,
 रुचि आछे मन की दौर।
 तोसैं छिन-छिन मन मिलै,
 हौं बहुत कहौंगी और॥५॥

श्रीवृंदावन सहज सुहावनौ,
 राजत जमुना के फेर।
 कुंज-कुंज अलि गुंजहीं,
 मानों मदन सदन के मेर॥६॥
 इक दिन अति आतुर मिल्यौ,
 नव चंपक कुंज किसोर।
 तन-मन की मोसैं सब कही,
 सखि, याकी प्रीति न थोर॥७॥
 जित-जित हौं तितही चलै,
 तित आपुन हू चलि जाइ।
 तितहीं मोहू लै चलै,
 कछु आनंद कह्यौ न जाइ॥८॥

कुंज-कुंज कौतिक घनों,
 लै तहीं-तहीं बिरमाइ।
 ता छिन तैं ता ठौर तैं,
 सखि, आगे चलयौ न जाइ॥९॥
 जल थल कुंज पुलिन बन घन,
 रंग रह्यौ भरि कह्यौ न जाइ।
 सब पंछी द्रुम तृन जलनि,
 अलि कमलनि चलत डुलाइ॥१०॥
 मेरे मन के आगे ही फिरै,
 अति संपति सहित सुहाइ।
 जब चाहौं ताही समै रति,
 तैसिये ह्वै मिलि जाइ॥११॥

श्रीवृंदावन जो सु कृपा करें,
 तौ निज सुख मननि समाइ।
 हम इनही की आस,
 अनत सुख सपनें हू न सुहाइ॥१२॥
 लाल रतन मनि मुक्तामय,
 तरु ललितै लता उदार।
 स्यामै सेवत नित नये,
 फल-फूल प्रेम के भार॥१३॥
 नारिकेलि नव नारंगी,
 सत अंब मौर बहु ठौर।
 देखत सोभा बन घनौ,
 रस रीझि रह्यौ सिरमौर॥१४॥

श्रीवृंदावन जब देखौं तबही,
 नयौ नित लेत प्रेम उपजाइ।
 या रंग रस में मन झूमही,
 तौ भूलि पाछिलौ जाइ॥15॥
 जा दिन तू पाछे रही,
 मोहि मिल्यौ सामुहै आइ।
 मोहि अकेली देखि कै,
 कछु सुख ही में सुख पाइ॥16॥
 तब पूछी संग की कहाँ,
 मैं उत्तर दियौ बनाइ।
 नव कुंदन की कुंज कौ,
 तैं पतौ मिलायौ आइ॥17॥

तब सुनि सुख दूनौ भयौ,
 मन फूल्यौ अंग न माइ।
 तो तन चितै-चितै हँसि,
 मेरे पाँइनि पर्यौ लड़ाइ॥18॥
 तब मेरौ मुख चूम्यौ, माथौ चूम्यौ,
 अरु चूमे नैन कपोल।
 तेरे देखत सब भयो,
 यौं कह्यौ लियो बिन मोल॥19॥
 इक दिन नवल निकुंज में,
 नटु रह्यौ लता सौं लागि।
 हौं फूलन के ख्याल ही,
 मोहि मिल्यौ मदन मद जागि॥20॥

ताकी बातनि ओर न पाइये,
 अति गावत सुघर सुदेस।
 खेलत छिन-छिन ख्याल में,
 मोहि मिल्यौ मनोहर बेस॥21॥
 गुन-गन रूप अचागरौ,
 अति चंचल अँग-अँग।
 कोक मनौ मुख ही पढ्यौ,
 तन उपजत अनंत अनंग॥22॥
 तब मेरौ हाथ छियौ हियौ छियौ,
 पुनि कर परसि कपोल।
 चितवत ही चित-बित हर्यौ,
 मेरे सुनत मधुर मृदु बोल॥23॥

इक दिन कालिंदी के कूल ही,
 ठाढ़ौ ललिता के संग।
 तैं मोसौं तबही कह्यौ,
 यह तेरेई रस-रंग॥24॥
 तू कछु उनही मिलावती,
 मोसौं करत सैन ही बात।
 मेरी सी मोसौं कहै,
 उनकी पुजवति सब घात॥25॥
 प्यारीजू, तुम हम सौं ऐसी कहौ,
 तेरे पिय के प्रेम अवेस।
 तेरे मन कौ भामतौं,
 मिलि करि रमत सुदेस॥26॥

प्यारीजू, हम साँझ समै साँझै कहैं,
 (और) कहैं भोर सौं भोर।
 बात कहौ सो समझिये,
 पै मन कौ ओर न छोर॥27॥
 सखि, तू जानत सब दिन की सबै,
 घट नट-नागर की बात।
 कौतिक नित नये करै बहु,
 निपुन कला सत सात॥28॥
 अजू, तुम मिले सयाने चतुरई,
 बिच भोरी हू दै दै जात।
 मेरौ यहै सहज सदा सुख,
 देखत सुनत न अघात॥29॥

मोहन सौं मुख की कछु कहि आबै,
 पै जिय ते निकसि न जाइ।
 सब दिन यह सुख जीजियै,
 नैकु तुम सौं कहत लड़ाइ॥30॥
 भावत सबही भाँवतौ,
 सुनि तेरे सुख संतोष।
 तेरे सुख ते ही सुखी,
 अरु है समरथ सब घोष॥31॥
 सखि, इक दिन हौं जमुना जल न्हात ही,
 मैं देख्यौ बन में जात।
 ना जानौं कित हूँ मिल्यौ,
 हौं चौंकि परी सब गात॥32॥

केस कुसुम बैनी सिथिल,
 गई जलजमनि-माला टूटि।
 करनफूल खुटिला खुले,
 कंचुकि नीबी बंद छूटि॥३३॥
 सादौ भेष उताइलौ,
 फिर सच्यौ आपने हाथ।
 बैनी गुहत कछू कह्यौ,
 मोहि राखि आपने साथ॥३४॥
 सखि, तोहू सौं न जनावही,
 मोसौं हरुवे हाहा खात।
 नैक निकट ही ओट होत,
 तब तोहू सौं बिललात॥३५॥

प्यारीजू, तुम इनही कौ कह्यौ करौ,
 कछु हौं तौ नहीं अनखात।
 भीर परै जो साँकरें कछु,
 हौं संग ते नहिं जात॥३६॥
 तुम्हरी इनकी अटपटी,
 एकौ जानी नहिं जाइ।
 अनजानत हूँ जानिये,
 पै प्रेम न बरन्यौ जाइ॥३७॥
 प्रेमै आहि कहै कोऊ,
 यह सुख दुख लाभ कि हानि।
 रिसही में हाँसी आवै,
 हौं कहत नहीं कछु बानि॥३८॥

सखि, तोते अधिक न जानिहौं,
 कोउ कहै तो लागौं पाँड़।
 मेरे मन संसै रहै,
 मोसौं तू कहि दाव उपाड़॥३९॥
 प्यारीजू, तुम मेरौ कह्यौ करौ,
 ये कहैं सो कीजै बेगि।
 सखि, तेरौ कह्यौ कहा करौं,
 यह लावनि भर्यौ अनेगि॥४०॥
 मोहन करिहो कहा सु कीजिये,
 यौं सुनत भयौ चित चाव।
 जगत बिदित हमहूँ सुन्यौ,
 तू रसिक रंगीलौ राव॥४१॥

प्यारीजू, तेरे बरन बसन करौं,
 तन तेरेई अनिहार।
 तेरी सी बातें लगै,
 कहि जीवत बदन निहार॥४२॥
 तौलौं चलौं मिलौं तौही लौं,
 (तौ) पहिचानिहै न कोड़।
 मिले मिलाये रंग रहै,
 तौ खेल चौगुनौ होड़॥४३॥
 मोहन, आहि भली जो ह्वै आवै,
 तौ मिलौ सखी सौं जाड़।
 बहुर्यौ मिलिहैं कुंज में,
 लियो जलहू कौ सुख पाड़॥४४॥

तब निकट सुनत ही सहचरी,
 फिर चितयौ नैन बिसाल।
 मनिचूरा चौकी चुरी,
 दै राती बेंदी भाल॥45॥
 सखि, देखत है याकौ मतौ,
 यह याकी टेब न जाइ।
 बरजत ही बरजत हठि,
 आयौ फाँदा फूली बनाइ॥46॥
 तब लाल सकुचि ठाढ़ौ भयौ,
 कछु रूप न बरन्यौ जाइ।
 चितै-चितै मुख साँवरौ,
 तन उपजत अगनित भाइ॥47॥

तन मन प्रान पलटि परे,
 लीने उर साँ उर लाइ।
 रस बस भये न जानहीं,
 निसि बासर गयो बिहाइ॥48॥
 सखि, तेरे सँग सुख पाइयै,
 सब तेरौ कियौ सहाइ।
 सुरति रंग में रँग रह्यौ,
 रस रीझि रह्यौ गहि पाइ॥49॥
 सुंदरि, तेरी कृपा कहा कहौं,
 यह रस जस प्रेम प्रकासि।
 बलि-बलि श्रीहरिदास की,
 जिन करी (है) बिहारिनिदासि॥50॥



श्रीस्वामी बिहारिनदेवजी का पद (झूमका)

ताल-धमार

[राग विलावल]

मेरे पिय-प्यारी कौ झूमका सखि,

कहत परस्पर प्रेम 'लाल बलि लाड़िली हो'।

ये दोउ निमिष न बीछुरैं सखि,

इनहिं प्रेम कौ नेम॥1॥

प्रथम लड़ैती गाइहौं,

जाकौ श्रीबृंदावन धाम।

पुनि रसिक रंगीलौ गाइहौं,

जाकौ कुंजबिहारी नाम॥2॥

नख-सिख सुंदर सोहई,

दोउ अद्भुत रूप अपार।

एक प्रान तन द्वै धरैं,

अति मधुर प्रेम रस सार॥3॥

पहिलौ झूमक ताहि कौ,

जाकौ सोहत सहज सुहाग।

दूजौ झूमक ताही कौ,

जाकौ बाढ़त अति अनुराग॥4॥

पूरन प्रेम प्रकासिनी,

श्रीस्यामा अति सुकुंवारि।

मोहनजू के नैन चकोर लौं,

ससि जीवत बदन निहारि॥5॥

नव चंपक तन कामिनी,
 पिय सुभग साँवरे अंग।
 दोउ सम वैस विराजहीं,
 लजि लागत पगनि अनंग॥६॥
 नित नवलकिसोरी नागरी,
 नित नागर नवलकिसोर।
 प्रेम परस्पर झूमहीं,
 जुरि दोउ नव जोवन जोर॥७॥
 तन मन अरुझि न सुरझहीं,
 दोउ मगन मदन मद मोद।
 प्रेमसहेली सुंदरी, दोउ-
 दौरि लिये गहि गोद॥८॥

झूमत - झूमत आवहीं,
 छबि अंसनि झूमक बाहु।
 कुंज कुटी तन मन दियें,
 दोउ फूलत नागरी नाहु॥९॥
 झूमक झब्बा झलकहीं,
 नीबीबंद बाजूबंद।
 तरकि-तरकि बंद टूटहीं,
 सुख लूटत अति आनंद॥१०॥
 स्याम अधर अंजन भए,
 मिलि राते नैन कपोल।
 श्रम-जल-कन बदन विराजहीं,
 मानौ नव मुक्ता निरमोल॥११॥

अब और छवि छाजहीं,
 सखि देखौ मन दै धाइ।
 अपनौ सर्वस साँवरौ,
 लेहु ललना लाल लड़ाइ॥12॥
 झूमक सारी झूमहीं,
 सखि पहिरें झूमक देहिं।
 हरषि-हरषि रस बरषहीं,
 सखि निरखि-निरखि सुख लेहिं॥13॥
 श्रीबृंदावन दिन झूमका,
 सखि झूमि रह्यौ फल-फूल।
 सुनि मन मुदित सबै आई,
 झूमि कालिंदी के कूल॥14॥

मेरे कुंजरवन कौ झूमका,
 गुन गावत कोकिल कीर।
 प्रेम उमँगि हियौ भर्यौ,
 सुख झूमत जमुना नीर॥15॥
 माते मुदित सिलीमुखा,
 झूमि देत मधुर सुर घोर।
 आनंद उमँगि अलापहीं,
 कल नाचत मोर चकोर॥16॥
 झुंडनि-झुंडनि मृग मृगी,
 जुरि नैननि झूमक दैहिं।
 सुंदर बदन निहारहीं,
 सुर सब्द श्रवन भरि लैहिं॥17॥

निरखि-निरखि मुख रुख लियें,
 बहुरी सब सीस नवाइ।
 तन मन गुन अर्पन कियौ,
 सुख दीनों दुहुनि अघाइ॥18॥
 तब उनमान्यौ मन कौ मतौ,
 सखि लै चली सुहित जनाइ।
 सुंदर पुलिन सरस कन झलकत,
 कमल कुमुद देखौ आइ॥19॥
 तहाँ सारस हंस प्रसंसित,
 झूमक देत सुगतिन दिखाइ।
 प्यारी हार पीतांबर पिय सौं,
 रीझि दियौ सुख पाइ॥20॥

आगे उमँगि चलत लटकत,
 सखि झूमक दै दुलराइ।
 तहाँ नये-नये रस छाकत कौतिक,
 उझकत छबि रहि छाइ॥21॥
 कदली कुंद कदंब अंब,
 बन बीथिन बर विरमाइ।
 तन बन किधौं बन तन भयौ,
 कछु ब्यौरो बरन्यौ न जाइ॥22॥
 मनिमंडल मुक्तामहल,
 बहु रतनसार चित्रसाल।
 कनक कलस छाजे झलकत,
 बहु झूमत रतन प्रबाल॥23॥

मधि मंजुल नव कुंज किसलय दल,
 सीतल सेज सुरंग।
 कोमल कुसुम सरस सौरभ सब,
 सम पराग बहु रंग॥24॥
 जाके परदनि द्वार झरोखनि झूमत,
 मनसिज मदन अनंग।
 तहाँ बैठे रीझि सराहि रसिकबर,
 निरखि हरषि अँग-अंग॥25॥
 चिबुक टटोरत छँद बंद छोरत,
 परसत हँसत उतंग।
 याही रस खेलत पुनि पुनि,
 पिय प्यारी लेत उछंग॥26॥

अंगराग अनुराग रँगै,
 दूलह दुलहिनि द्वै देह।
 सहचरि कहत सुरति सुखसागर,
 झूमौ सहज सनेह॥27॥
 जै जै श्रीहरिदास प्रताप चरन बल,
 बिपुल सु प्रेम प्रकासि।
 मेरे गौर-स्याम कौ सरस झूमका,
 झूमि बिहारिनदासि॥28॥



श्रीस्वामी जू की नामावली

[राग आसावरी]

श्रीहरिदास गाऊँ श्रीहरिदास गाऊँ।
 श्रीहरिदास गाड़ गाड़ विपुल प्रेम पाऊँ॥१॥
 श्रीहरिदास नाम गुन रूप तन राऊँ।
 श्रीहरिदास प्राननि के प्रानहिं जिवाऊँ॥२॥
 श्रीहरिदास लैना श्रीहरिदास दैना।
 श्रीहरिदास भजें भैया कछु भैना॥३॥
 श्रीहरिदास द्यौसौ श्रीहरिदास रात्यौ।
 श्रीहरिदास व्यौहार श्रीहरिदास बात्यौ॥४॥
 श्रीहरिदास बल बुधि कुल जाति पाँती।
 श्रीहरिदास भेंटत सीतल भई छाती॥५॥

श्रीहरिदास अंग बिन संग तजि साँतौ।
 श्रीहरिदास हिलग बिन हेत करि हाँतौ॥६॥
 श्रीहरिदास प्रेम बिन नेम न सुहातौ।
 श्रीहरिदास हित बोलत, मिलत महल कौ नातौ॥७॥
 श्रीहरिदास नाम रुचि, श्रीहरिदास नाम सुचि।
 श्रीहरिदास नाम लियें जाहिं दुख दोष मुचि॥८॥
 श्रीहरिदास कर्म श्रीहरिदास धर्म।
 श्रीहरिदास नाम निधि बेधि लै मन मर्म॥९॥
 श्रीहरिदास ग्यान श्रीहरिदास ध्यान।
 श्रीहरिदास नाम करि कोटि अस्नान॥१०॥
 श्रीहरिदास नाम मेरे मंत्र माला।
 श्रीहरिदास नाम मुद्रा तिलक भाला॥११॥

श्रीहरिदास सेवा श्रीहरिदास पूजा।
 श्रीहरिदास भजन बिन भाव नहीं दूजा॥12॥
 श्रीहरिदास भक्ति रति, श्रीहरिदास परमगति।
 श्रीहरिदास जस गावत, भई सुदृढ़ मति॥13॥
 श्रीहरिदास ब्रज रीति, श्रीहरिदास रस रीति।
 श्रीहरिदास नाम लियें, सकल साधन जीति॥14॥
 श्रीहरिदास निज दरसि, श्रीहरिदास रस परसि।
 श्रीहरिदास सुख देत, श्रीहरिदास हित हेत॥15॥
 अनन्य नृपति श्रीस्वामी हरिदास निज दास।
 श्रीवरबिहारिनिदासि विलसत किलास॥16॥



श्रीहरिदास कृपानिधि सागर हैं।
 निसिदिन नैननि के डोरनि साँ, झुलवत नागरि नागर हैं॥
 सरस गान करि रिझवत दंपति, सब रसिकन तें आगर हैं।
 ललितकिसोरी बिजै रूप धरि, निधिवन वास उजागर हैं॥

— श्रीकिशोरीअलीजी

जय जय श्रीहरिदास अनूपम साहिबी।
 तिनकी समसरि और बताऊँ काहिबी॥
 ऐसौ न है, नहीं हैहै इहि जग कोई।
 जा ऊपर कर धर्यौ आपुन सम सोई॥
 सोइ जानिहैं हरिदासजू कौ, मर्म अति ही निगूढ़ है।
 सूझै तिनहिं क्यों कर्मजाल, परे महा मतिमूढ़ है॥

हरिदास नौका नाम चढ़ि जे, उतरि गये भव पार ते।
दरसी अनूपम माधुरी मन, मुदित नित्यविहार ते॥

—श्रीशीलसखीजी

तत सुख मधि छिन छिन सुखित, अपसुख गंध न लेस।
किसोरदास या भाव को, सूक्ष्म दुर्गम देस॥
सूक्ष्म दुर्गम देस के, श्रीहरिदास नरेस।
कियें दृगन कूँ आरसी, सजत सिंगार सुपेस॥

—श्रीकिशोरदासजी

सुन्दर रज तिलक भाल बाँकी भृकुटी बिसाल,
रतनारे नैन नेह भरे दरस पाऊँ।
वारौं छवि चंद वदन सोभा सुखसिंधु सदन,
नासावर कीर कोटि काम को लजाऊँ॥

अधर अरुन दसन पाँति कुंदकलिका बिसाँति,
कमल कोस आनन दृग मधुप लै बसाऊँ।
मधुर वचन मंद हास होत चाँदनी प्रकास,
जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत गुन गाऊँ॥
कंबु कंठ मंजु दाम गौर अंग छवि सुधाम,
कुंदन तैं सरस मृदुल मोहन मन भायो।
नाल सहित कंज पान देत सदाँ अभय दान,
तजिकैं अभिमान साह अकबर सिर नायो॥
चरन-कमल कामधेनु सकल कामना सुदेनु,
दरसैं दृग होत चैन आपदा भगायो।
करुवा गूदरा पास वृन्दावन करैं बास,
जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत अपनायो॥

कुंजबिहारी एक आस और सकल तजि दुरास,
 असन बसन तें उदास बाँके ब्रतधारी।
 गान दया गुन निधान रसिक-मुकुटमनि-प्रधान,
 राग-भोग बखत जानि तोषत पिय-प्यारी॥
 तिमिर-हरन कौं दिनेस ताप-हरन कौं निसेस,
 पाप-दहन पावकेस गुरुता मुखचारी।
 निधिवन आसीन नित वर बिहार सरस चित्त,
 जै जै श्रीहरिदास रसिक भगवत बलिहारी॥
 पारस सौ धन परिहृत्यौ, सेवक अकबर साहि।
 श्रीस्वामी हरिदास सम, और बताऊँ काहि॥
 और बताऊँ काहि अवधि वैराग ज्ञान की।
 भक्ति सुमूरतिवत प्रेमनिधि दसा ध्यान की॥

नित्यविहार अधार प्रगट सेवा नहिं आरस।
 भगवतरसिक नरेस मिले गुरु पूरे पारस॥
 -श्रीस्वामी भगवतरसिकदेवजी
 कूँची नित्यविहार की, श्रीहरिदास हाथ।
 सेवत साधक सिद्ध सब, जाँचत नावत माथ॥
 सुजस सदा हरिदास कौ, श्रवन होइ कै गान।
 ताकौं प्यारी लालजू, बिहँसि देहिं सिर पान॥
 श्रीवृन्दावन दंपती, जो चाहै रस-रीति।
 श्रीस्वामी हरिदास के, चरनन सों करि प्रीति॥



॥ कौतुक ॥

चलौ जू कौतुक देखन जाँहि।
सूचत सखी सुख प्रेम परस्पर नव जुवतिन मिलि माँहि॥1
गावत प्रेम भरी मन भावति फूली अंगनि माँहि।
नव बन नव निकुंज नव पल्लव नवं दल शीतल छाँहि॥2
विविध रंग चित्रित बीथिन चलि विमल जमुन जल न्हाँहि।
कोमल कूल मूल बंशीवट निकट अटक कछु नाँहि॥3
सुन्दर पुलिन नलिन नाना रंग अलि अवलि अरुझाँहि।
उडत पराग राग रंजित रस मत्त मुदित गुंजाँहि॥4
त्रिविध पवन मृदु गवन परम रुचि परसत श्रम नसि जाँहि।
अति रति रुचि राजत संपति सुख दम्पति हियें हिताँहि॥5
तहाँ विहरत द्वै मीत मनोहर बन बसि अनत न जाँहि।
मृदु कुन्दन मनिमय अवनी पर रवनी रवन रमाँहि॥6

आज समाज सहज सुख बरसत हरषत मिलि मन माँहि।
कोमल काम प्रेम मधुरे रस रहसि बहँसि किलकाँहि॥7
मानो मल्ल जुगल जीतन हित नित छल बलहिं तुलाँहि।
राती गाती छाती कसि कटि पीत बसन फहराँहि॥8
अंगराग मर्दत भुज दंडनि मुख मंडित मुसिकाँहि।
बिनु बैननि सैननि सुख नैननि चितै चितै इतराँहि॥9
हावभाव भृकुटिन मटकत नट अटकिलटकिलपटाँहि।
अपनी अपनी गौं गहि घातनि बातनि विहँसि रिसाँहि॥10
कबहुँ कबहुँ जुरि-जुरि अंग-अंग मुरि परसत हून पत्याँहि।
अति लावन्य निपुन लाधवता पुनि सनेह नियराँहि॥11
सकल कला कोविद विद्यानिधि काहू धीरज नाँहि।
हाथापाई करत नवल बल अति व्याकुल अकुलाँहि॥12

छाँडत गहत गहावत भावत अति रसमस मिलि जाँहि।
 गूढभाय गाढे आलिंगन चुम्बन सखी सिहाँहि॥13
 अति सुगन्ध समरन्ध भंये मिलि अलि नलिनी बलि जाँहि।
 सहज सुरति रसमत्त परस्पर अंक निसंक समाँहि॥14
 सुखद खुमारी कुंजविहारी पुनि ऐँडाहि जँभाँहि।
 ये पुजवत वे निजवत इहि रस अचै अचै न अघाँहि॥15
 श्रीबिहारिनिदास लड़ावत त्यों त्यों अलकलड़े लड़काँहि।
 उमा रमा को सची सरस्वती बृजजुवती ललचाँहि॥16
 तिनकौ दरस देव दुर्लभ जे आराधा राधाँहि।
 भुवि बसि वृन्दावन नहिं सेवत ते प्रानी पछिताँहि॥17



॥ होरी ॥

सब सखी मिलि झूमक देहिं, मेरौ लाल विहारी मन हरयो।
 श्री हरिदास सहज रति बरनौं श्री वृन्दावन अति रम्य।
 श्रीविपुलबिहारिनिदास कृपा बिन सबके मननि अगम्य॥1
 कमल कुमुद फूले जल थल सखि सुखद तरनिजा कूल।
 सारस हंस चकोर ललित गति लटकि चलत मन फूल॥2
 नवनिकुंज सुख पुंज मनोहर उदित कमल की काँति।
 नृत्य करत सिखीकुल फूले कौतिक नाना भाँति॥3
 द्रुम बेली फूली लता नितही रितु शरद बसन्त।
 अद्भुत भूमि रंग राजें अति शोभा सुखहिं न अन्त॥4
 रज कर्पूर सुगन्ध त्रिविध बहैं शीतल मन्द समीर।
 अति रसमत्त मुदित कल कूजित शुक पिक भृंगनि भीर॥5

सेवत काम अनन्त कला नित कुंजमहल आगार ।
 लाल रतन मनि मुक्ता झूमत रचित वितान अपार ॥6
 कनक खचित मंडल पर राजें कुँवरि संग सुकुँवार ।
 मृदुमनि श्याम तमाल लता मानौ कनक कुसुम उर हार ॥7
 श्रीललितादिक सखी आँई झूमि सब आवझ साजि मृदंग ।
 एक लिये करतार झाँझ डफ वर बाँसुरी मुखचंग ॥8
 एकनि कर कठतार अधौटी मुरज रबाव उपंग ।
 एक लिये किन्नर कर बीन बजावत गावत तान तरंग ॥9
 एक अरगजा कनक कलश भरि सोंधे सरस रसाल ।
 एकनि कर पिचकारी एकनि कर बूका बन्दन अरुन गुलाल ॥10
 एक लिये बीरी कर कन्दुक अरु कुसुमनि के हार ।
 झूमत सुघर सुनावत चाँचरि सप्त संच सुर तार ॥11

प्यारी हँसि मोहन सों बोली आवौ जू मिलि खेलें फाग ।
 सुखद बचन सुनि श्याम सहेलिन बाढ्यो अति अनुराग ॥12
 ललिता लै पिचकारी दीनी श्री श्यामा जू कौं आय ।
 छिरकति भरति भाँवते पिय कौं रहसि बहसि हँसि जाय ॥13
 मोहन भरि पिचकारी लै कर छलबल तकत उपाव ।
 नागरि नवल प्रवीन प्रिया ये क्यों हू न पावत दाव ॥14
 दृष्टि बचाय अलि आगे लै बूका बन्दन अरुन गुलाल ।
 आइ अचानक भरि प्यारी हँसि होरी (है) बोलत लाल ॥15
 कामिनि कटि पीताम्बर कर गहि कहति बचन मुसिकाय ।
 बहुस्यो भरौ चपल नट नागर नख सिख छवि रही छाय ॥16
 भूषन बसन सबै सने (और) कुमकुम सोंधे गुलाल ।
 निरखि हरषि सुख प्रेम उमँगि गुन गावत सखि नव बाल ॥17

गौर श्याम तन रुचिर मनोहर चितवत बिबि मुख ओर ।
 करत सुधा रस पान परस्पर लोचन त्रिषित चकोर ॥18
 दरस परस रसमत्त भये दोउ विलसत हँसत अनंग ।
 अंग अंग हरषत सुख बरषत खेलत भरि रस रंग ॥19
 राग रंग रस सुख बाढ्यो अति शोभासिन्धु अपार ।
 विपुल प्रेम अनुराग नवल दोउ करत विहार अहार ॥20
 श्री वृन्दाविपिन विनोद करत नित छिन छिन प्रति सुखरास ।
 कामकेलि माधुर्य प्रेम पर बलि बलि नागरिदास ॥21



सेवा के पद

प्रातःकाल उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर, जहाँ स्वामीजी एवं श्रीबिहारीजी महाराज विराजमान हैं, वहाँ जाकर पहिले गुरुजी को साष्टांग दंडवत करें। फिर श्री स्वामीजी, श्री बिहारीजी को साष्टांग दंडवत कर, प्रगट सेवा पदों के अनुसार प्रारम्भ कर दें। मानसी सेवा में स्नानादि शुद्धि-अशुद्धि का विचार न करके, जैसी अवस्था है उसी में एकान्त में बैठकर, श्रीहरि के चरणों में चित्त एकाग्र करके, पदों के द्वारा ही लाड लडाने में लग जाय।

भोर में जगाने के पद :-

(1)

जागो जी जागो भोर भयो ।
आलस खोलो श्री मुख बोलो
अब जिनि करो ऐसो हियो ॥
मान किये न बनै मम जीवन
या रस बस हौं जियो ।
श्री ललित मोहिनी यों समुझावति
करिये जू इनही कौ कह्यो ॥

(2)

प्रीया श्याम संग जागी है ।
शोभित कनक कपोल ओप पर
दसन छाप छवि लागी है ॥
अधरन रंग छूटी अलकावलि
सुरति रंग अनुरागी है ।
श्री बीठलविपुल कुँज की क्रीडा
काम केलि रस पागी है ॥
स्नान कौ पद :-
जमुना जल विमलत जुगल किशोर ।
उबटि न्हाय पहिर पट सुन्दर
सजे सिंगार दोउ ओर ॥

रस भोगी रस भोगत रुचि सों

हिल मिल हिये हिलोर ।

श्री भगवत अधर पान लै

अचवन बीरी देत मुख जोर ॥

सिंगार कौ पद :-

मंजन करि मन मोहिनी मोहन मुदित

परस्पर करत सिंगार ।

माँग सुहाग कुसुम रची पाग

अति अनुराग पहिर उर हार ॥

मृगमद आड रची वर बैंदी

अंजन नैन निरखि मुख चार ।

श्री नागरीदास विचित्र विहारी विहारिनि

हुलसि विलसि सुखसार ॥

भोग के पद :-

(1)

भोजन भोगिये पिय प्यारी ।

कुंजमहल ललिता हरिदासी

दुलहिन कुंजबिहारी ॥

श्री विपुलबिहारिनिदास सरस

मिलि प्याय सुधा रस झारी ।

श्री नरहरिदास रसिक सखियन

मिलि जेंवत ललन बिहारी ॥

भोजन करत भाव ते जी के
 रसिक किसोर किसोरी जू ।
 छप्पन भोग छत्तीसों ब्यंजन
 अंग अंग उमँगि न थोरी जू ॥
 चार भाँति के षट रस कौरनि
 लेत देत दोउ ओरी जू ।
 प्रेम पियूष पियत अधरनि लागि
 तृपति न मानत जोरी जू ॥
 हाव भाव परिरम्भन चुम्बन
 सुरति समुद्र हिलोरी जू ।
 फिर फिर अरत लेत नहिं अचवन
 रूप सुधा दृग कोरी जू ॥

विवस असावधान विहरत दोउ
 कसन बसन सब छोरी जू ।
 जुगल केलि कल कलित कलानिधि
 भगवत नैन चकोरी जू ॥

आचमन :-

अचवन लेत मोहिनी मोहन ।
 रूप अनूप अपार अलौकिक
 अंग अंग प्रति जोहन ॥
 बचन रचन बीरी ब्रीडा जुत
 बसन सम्हारत सोहन ।
 श्री भगवत रसिक सहचरि
 सन्मुख मुकुर दिखावत दोउन ॥

आरती :-

(1)

आरती आन सहचरिन साजी ।

मनिमय थार प्रेम की बाती

घृत कपूर रुचि राजी ॥

ज्योति जगाय नेह चितवन

मुसिकान लाज लजि भाजी ।

श्री भगवत रसिक वारि तून तोरत

झाँझ झालरी बाजी ॥

170

(2)

आरती कीजै सुन्दर वर की ।

नागर नवल निकुंज इन्दु जुग

अखिल ताप तम हर की ॥

नव विलास मृदु हास मनोहर

श्रवत सुधा सुखकर की ।

श्री बिहारीदास लोचन चकोर

नित अंस प्रिया भुजधर की ॥

171

शायन :-

पौढे दोऊ ललित लतान तरे ।

सुमन सेज सुखरासि सनेही

अधरनि अधर धरे ॥

उरजनि उरज जोरि कटि सों कटि

लपटि भुजान भरे ।

यह रस मत्त मगन मन सोये

(श्री) भगवत व्यंजन करे ॥

वन विहार :-

विहरत लाल विहारिनि दोऊ

श्री जमुनाजी के तीरे तीरे ।

अद्भुत अखंड मंडल भू पर

वर भामिनि भुज भीरे भीरे ॥

कुंज गगन घन अलक बदरिया

चलत परस्पर सीरे सीरे ।

उपजत किरन कपोल विमल हँसि

लसि दसनावलि हीरे हीरे ॥

तामें द्वै शशि श्रवत सुधा

श्रमजलकन मुख छबि नीरे नीरे ।

लोचन चारु चकोर चितै हित

पीवत अधीर न धीरे धीरे ॥

उमँगि मिलत अनुराग नवल वर

कल कुंडल चल बीरे बीरे ।

श्री बिहारीदास सुरझत नहिं तन मन,

अरुझि अरुन पट पीरे पीरे ॥



कृपा तथा कृतज्ञता

साधन श्रम ना कछु कियो, ना कछु करिवे जोग ।
कृपा श्री विहारिनिदास की, सहज संजोगी भोग ॥1
आपुन ही अपनी करी, अपनी यों निज जान ।
श्री विहारी विहारिनिदास कसि, लीनी भली पिछान ॥2
किरपा कीजै लाडिली, अंग संग सुख दरसाय ।
तन मन बिलसौ एक, प्रीतम प्रान समाय ॥3
सुनहु रसिक वर, राब कुंजविहारी लाडिले ।
दीजै अपनौ भांव, लीजै बेगि बुलाय के ॥4
हों अनाथ तुम नाथ हो, करुणा सिन्धु उदार ।
श्री ललित प्रिये हरिदास जू, पोषो सुखद विहार ॥5
कुंजविहारिनि लाडिली, मेरी जीवन प्रान ।
ताही के सुख में सुखी, मोहि रसिक की आन ॥6

मेरी प्रिय हैं स्वामिनी, छिन छिन प्रीत नवीन।
मेरे सुख में अति सुखी, हौं उनके सुख लीन॥7
हम हैं हरि के लाडिले, हरि ही कौ करयो सब होय।
सो हरि हमरे हित सदाँ, रसिक शिरोमनि सोय॥8
जामें हरि प्रसन्न होंय, सोई कीजै बात।
अपनी चाह न ऊपजै, याही में कुशलात॥9
रोम रोम आनन्द भयो, छिन छिन होत हुलास।
कुंज विहारिनि लाडिली, सदाँ हमारे पास॥10
ललित कृपा कौ बपु धर्यौ, श्री स्वामी हरिदास।
रसिक शिरोमनि स्वामिवर, मम हियो निवास॥11
एक आस इक बास करि, एकै इष्ट उपास।
श्री विहारीदास अनन्यमत, बडौ भजन विश्वास॥12

कीर्तन

श्री हरिदास श्री हरिदास, जै जै श्री स्वामी हरिदास
स्वामी हमारे श्री हरिदास, प्रानन प्यारे श्री हरिदास
अति हितकारे श्री हरिदास, जै जै श्री स्वामी हरिदास
छैल छबीले श्री हरिदास, गुन गर्वीले श्री हरिदास
रसिक रसीले श्री हरिदास, जै जै श्री स्वामी हरिदास
सदाँ बिहारी विहारिनि पास, लाड लडावें केलि विलास
गौर श्याम के सुख की रास, जै जै श्रीस्वामी हरिदास
प्रेम अवतारी श्रीहरिदास, हित ब्रतधारी श्रीहरिदास
कृपा निहारी श्रीहरिदास, जै जै श्रीस्वामी हरिदास

(2)

कुंजविहारी श्रीहरिदास, बीठल विपुल विहारिनि दास

(3)

श्यामा प्यारी कुंजविहारी, जै जै श्रीहरिदासि दुलारी

(4)

जय वृन्दावन जय जमुना, जै बंसीवट जै पुलिना

(5)

कुंजविहारिनि कुंजबिहारी, जै जै प्यारे श्रीहरिदास

(6)

जै जै श्यामा जै जै श्याम, जै जै श्री वृन्दावन धाम

(7)

श्री हरिदास के स्वामी श्यामा - कुंजबिहारी।

श्री वृन्दावन की स्वामिनी श्री हरिदासि दुलारी॥

कीर्तन के बाद बोले जाने वाले पद

(1)

अनन्य नृपति श्री स्वामी हरिदास।

श्री कुंजबिहारी सेये बिन

जिन छिन न करी काहू की आस॥

सेवा सावधान अति जानि

सुघर गावत दिन रस रास।

ऐसो रसिक भयो नहिं

है है भुव मंडल आकास॥

देह विदेह भये जीवत ही

विसरे विश्व विलास।

श्री वृन्दावन रेनु तन मन

भजि तजि लोक वेद की त्रास॥

प्रीति रीति कीनी सबहिन सौं
 किये न खास खवास ।
 अपनों व्रत हठि ओर निभायो
 जौलों कंठ उसास ॥
 सुरपति भूपति कंचन कामिनि
 जिनके भाये घास ।
 अबके साधू व्यास हमहूँ से
 जगत करत उपहास ॥

(2)

आदि मध्य अवसान आसरो
 श्री हरिदास तिहारौ ।
 पिय प्यारी की केलि निरन्तर
 अनिमिष आप निहारौ ॥

180

श्री वृन्दावन की सुख सम्पति
 दम्पति दुति उर में धारौ ।
 रसिक अनन्य धन्य धन्य
 स्वामी अद्भुत रूप तिहारौ ॥

(3)

श्री हरिदास अनन्य नृपति
 रटि कुंजबिहारी पावैगौ ।
 श्री स्वामीजू प्रेम सुधाकर
 सुहृदय सील को ध्यावैगौ ॥
 आसुधीर कौ धीर पीर हर
 परम पुनीत कहावैगौ ।
 श्री वृन्दावन छबि रूप प्रकासै
 रसिकन के मन भावैगौ ॥

181

(4)

श्री हरिदास नाम निजु अमृत
सब मन्त्रन को सारा ।
आगम निगम पुरान पुकारैं
श्री गुरु रूप हमारा ॥
श्री गुरु वृन्दाविपिन बसावैं
दरसावैं पिय प्यारी ।
बरसावे छबि रूप लहरि की
महलिनि संग निहारी ॥

(5)

श्री हरिदास हमारे प्रीतम ।
घरम उदार रसिकवर नागर
रीझि रीझि कीनी आपुन सम ॥

182

अंग संग केलि निरन्तर बिहुरत
कुंजबिहारिनि प्रानन में रम ।
सुख को सार समूह ललित
रस ताहि पाय अब रही कौन गम ॥

(6)

श्री स्वामी आधार हमारैं ।
हौं अधीन मीन की गति लौं
जीवत ज्यों जल के आधारैं ॥
चात्रिक स्वांति-बूंद कौं पीवै
कहा भयो बरसे जल धारैं ।
आनन्दकंद चंद हरिदासी
रसिक सरूप चकोर निहारैं ॥

183

(7)

श्री हरिदास रसिकवर अंसी ।

अनमिष सुख रस रंग महल को
केलि कलोल प्रसंसी ।।

रति संग्राम बाम पिय उर पर
लसनि प्रीति अबतंसी ।

अधरपान उरजनि में मोहन
भुज सौं भुज मिलि गंसी ।।

अपने चरन कमल दरसाबो
मिटै रूप की गंसी ।।

(8)

जै श्री हरिदास रसिकवर की ।
परम अनन्य सुधरम बतायो
करमनि की छाती धरकी ।।
नित्यविहार निरन्तर निरखै
जहाँ नहीं गम विधि-हरकी ।
रूप रंग रस जस कल गावै
तिनुका लौं माया तरकी ।।

(9)

अहो रसिकपति तुम मेरी गति ।
पूरन दृष्टि इष्ट मेरे स्वामी
श्री हरिदास दीनी सुन्दर मति ।।

निरखत महल निकुंज सुदंपति
जुगल चरन पंकज सौं कल रति ।
श्री वृन्दावनवास दियो सुख कहा
कहै रूप अद्भुत करुना अति ॥

(10)

रसिकपति राय हमारी लाज ।
सरनागत आरत प्रतिपालत
सुन्दर चरन जहाज ॥
आचारज अद्भुत वृन्दावन
तुम त्रिभुवन सिरताज ।
रसिक रूप सखी बलि छबि
ऊपर चाहत सुधा समाज ॥

(11)

रसिकवर मोहि सनाथ कियो ।
महाप्रसाद दरस चरनामृत
माथे हाथ दियो ॥
नेह भरे दम्पति दरसाये
सीतल करयौ हीयो ।
विपुन सुवास रूप कौ दीनौ
इनसौ कौन बियो ॥

(12)

कलगी सत्गुरु के सिर सोहै ।
महामूढ अग्यान आँधरो
और धरै तो कोहै ॥

जाको कबहुँ काल न व्यापै
माया मोह न मोहै ।
सम दम करि इन्द्री मन जीतै
तुलि कनक और लोहै ।।
समर्थ सदा शरन स्वामी कौ
रसिक रूप छबि जोहै ।

(13)

श्री हरिचरन सुमिरिबौ रे ।
जब तेरो कागद आवैगो
तब तू रहि न सकैगौ रे ।।
छिन छिन आयु विहात रैन दिन
कैस भये सिर पर धौरे ।
संसै तजो विहारै गावो
छुटै माया जम जौरे ।।

(14)

भक्ति बिन जनम अकारथ जात ।
नीर बिना सूखे सरवर लाँ
तरवर ज्यों बिन पात ।।
जिनतै प्रगटत संत-सिरोमनि
धन्य ते जननी मात ।
रसिक रूप राधावर सुमिरो
सुफल करो नर गात ।।

(15)

मितै मलिनता मो मन की ।
स्यामा-स्याम सु छबि अवलोकै
सुधि न रहै या तन की ।।

मैं मेरी की बेडी छूटै

चाहि रहै नहीं धन की ।

साधु संग हरि नाम उचारौं

सुन्दरता निधिवन की ॥

(16)

✓ भजन करि लीजो वेगि भीया ।

प्रेम लछिना भक्ति सु गाई

श्री गुरु ग्यान दीया ॥

साधुन देखि चैन नैनन कों

सीतल होत हीया ।

श्री वृन्दावनवास देहिंगे

राधे-स्याम पीया ॥

(17)

हरि जस गावै सौई पियारो ।

निस दिन नाम सुधा रस पीवै

ताके उर में होय उजियारो ॥

आनन्द आँसू पुलक अंग फूलै

उनमत्त प्रेम फिरै मतवारो ।

रसिक रूप वृन्दावन यो बसि

सो मेरे नैनन को तारो ॥

(18)

मूरख लोगन माया जकरे ।

भूले मूढ अजान अभागे

मोती छाँडि पोति को पकरे ॥

सिछया देत लेत नहीं कबहूँ
 भौडें औडें डोलत अकरे ।
 जानत नहीं संत की सेवा
 झूलत यों छानन के मकरे ॥
 मानि बावरे पछितैहै तू
 जब जमदूत छुडावत मकरे ।
 रसिक रूप इनसों जिन बोलो
 ये तो तीन ताप के लकरे ॥

(19)

श्री हरिदास सरन जे आये ।
 श्री कुंजबिहारी ललित लाडिले
 अपने जानि निकट बैठाये ॥

कुंजकेलि निरखें निसिवासर
 अति आनन्द हिये में छाये ।
 दास बिहारिनि सब सुखरासि
 प्रान प्रिये हंसि कंठ लगाये ॥

(20)

✓ हमसे पतितन कौन सम्हारै ।
 सांचो विरद उदार सिरोमनि
 गुन औगुन न विचारै ॥
 विधि निषेध आचार न जानत
 ऐसे अनअधिकारै ।
 मोहन मुरलीधरन धीर बिनु
 को अति अधम उधारै ॥

आपुन अति अनुराग हितू लौं
 बोलि निकट बैठारै ।
 अपनौ सहज दिखाइ प्रेम भरि
 दै प्रसाद प्रतिपारै ॥
 सुनियत यहै सुभाव स्याम कौ
 दीननि निपट निहारै ।
 श्रीबिहारीदास निरपेक्ष
 महाप्रभु बिन को काज सँवारै ॥
 (21)
 गये दुसह दुख भये सबै
 सुख सेवत रसिकराय सिरमौर ।
 नातरु विवस हुतो ताके
 कर ग्रसत काल गहि एकै कौर ॥

महा मोह अग्यान तिमिर में
 हुतौ पतित महामति बौर ।
 श्री हरिदास हुंकारि उबारयौ
 इत भजि छूटयो दौरा दौर ॥
 स्याम सरन छाडै दुख बाढै
 कहा होत कीनै बल सौर ।
 लगी आग वन विस्व दसहु दिसि
 फिरि फिरि बरत उडत बहु जौर ॥
 चतुरदस लोकपाल बेहाल
 कहूँ कोऊ सुन्यौ न समरथ और ।
 श्रीबिहारीदास प्रभु तुम तजि अनत
 कहूँ नाहिनै दीनदुखियन कौ ठौर ॥

(22) 1103/1

✓ तुम तजि कौन सुखन कौ दाता ।
सबै स्वारथी सहाय न कोऊ
बंधु पिता सुत माता ।।
तुम निरपेक्ष निबाहत सब
दिन पूरन त्रिभुवन त्राता ।
तुम से प्रभु तजि अनत करत
रति ते पसु प्राननि घाता ।।
तुम उदार सुकुमार सहज
सुन्दरवर मुरि मुसिकाता ।
श्रीबिहारीदास छबि निरखि
मनोहर गौर-स्याम रंग राता ।।

(23)

अबहूँ बँध्यौ मोह के फन्दा ।
संकट परें सहाय न कोई
तुम बिन आनन्द कन्दा ।।
अपने ही अग्यान सहत सठ
विविध दुसह दुख द्वन्दा ।
नस्वर नेह देह सुख मानत
काम क्रोध आनन्दा ।।
विनती करि न सक्यौ सन्मुख
तुम सों श्रीवृन्दावनचन्दा ।
किये आपने भाये तुम बिसराये
ऐसो मैं मतिमन्दा ।।

कीने जतन जिते जाने

अब हार परयौ छंदबंदा ।
श्रीबिहारीदास के भय मोचन
तुम दिन दूलहु मकरन्दा ॥

(24)

साधू भाई भजन करै सोई जीतै ।
बात बनाये कछु हाथ न आवै
अंत चलैं उठि रीतै ॥
मन इन्द्रीन के बस हैं प्रानी
खोवत हरि सौ मीतै ।
श्री हरिदासी रसिक केलि बिन
और कहा लै कीतै ॥

(25)

दीनानाथ कब करिहौं कृपा मोकों
रहिहौं चरननि पासा ।
चरननि चित लाउँ गुन गाँउ
पाँउ प्रेम प्रकासा ॥
नील सुपीत हरित मनि कंचन
धरि हौं दुति वासा ।
हरषि हरषि मौन रहौं
निरखौं नव नित्य विलासा ॥
पतित पावन भक्ति भावन
पूरीहौ मन आसा ।
इहि भरोसे रटत रहत नित
नित्य बिहारीदासा ॥

(26)

देखत बदन प्रसन्न होत मन
आनन्द की निधि कुंजबिहारी ।
अपनो करि राखौ मनमोहन
मोहि मया करि सब सुखकारी ॥
हों कपटी कूर कृपन कायर
अति तातें कियें करत मनुहारी ।
अपने बल बुद्धि परत न आसंग
पासंग परसन कृपा तिहारी ॥
तुम सुनियत परम उदार चहूँ
जुग साखि सदा सेवक भैहारी ।
अपनो विरद विचार चतुर
चित करि सुदृष्टि इत नैंक निहारी ॥

द्वारे दुलराऊँ जस गाऊँ
पाऊँ दरस प्रसाद बिहारी ।
श्री बिहारीदास प्रभु जाऊँ कहाँ अब,
तुम सरनागति गतिव हमारी ॥

(27)

हो कृतग्य कृपानिधि
तुम्हरे कौन कौन उपकार सम्हारौं ।
कहि न सकौ गुन कोटि जनम
धरि रोम रोम रसना जो धारौं ॥
उत्तम जनम भजन यहि औसर
मौसर होत न काज सम्हारौं ।
भाव भक्ति को भेद बतायौं
श्री गुरु वचननि ते प्रतिपारौं ॥

सब विपरीत आचरन हों
 खर पलटे कूर कपूरहिं डारों ।
 करत विषै व्यौपार विकल मति
 हों सठ हानि नफा न विचारों ॥
 जहाँ जहाँ विपति करि सब सम्पति
 अनसमझें कृतघन हों हारों ।
 श्री बिहारीदास हरिदास कृपा ते
 कुंजबिहारी अब छिन न बिसारों ॥

(28)

हरि मोहिं यों अपनाय लियों ।
 जहाँ जहाँ विघन जान्यौ
 अपने को तहाँ तहाँ जतन कियों ॥

202

हों तो पतित अपराधी अतिसै
 कृपा कटाक्षि जियों ।
 श्री बिहारीदास प्रभु अति
 करुनामय प्रगट प्रसाद दियों ॥

(29)

जब ते प्रभुहिं नवायौ माथ ।
 तब ते सुख ही में सुख दीनो
 लीनो गहि हरि हाथ ॥
 आज्ञा हीन दीन न भयो पै
 तज्यौ न स्वामी साथ ।
 श्री बिहारीदास चेरें सों राच्यौ
 सहज सनेही नाथ ॥

203

(30)

श्री हरिदास चरन चिन्तन बिन
और कहा कलियुग में हेतु।
कल्पतरु फल फूल प्रेम भरि
सन्मुख भये अभय कू देतु ॥
अरु कृपन काहू कछु पूछत
भटकत फिरत विषै विष लेतु।
श्री बिहारिनिदास दिन दरस परस
रस आलस बिन पड़यतु चित चेतु ॥

(31)

संत सब हरि के संग बसै।
भाल तिलक उर माल विराजे
अद्भुत भांति लसै ॥

अति उदार माया के त्यागी
कबहूँ न मोह फसै।
रसिक रूप राधावर निरखै
आनन्द भरे हँसै ॥

(32)

मौकों श्रीहरिदास कृपा कै दियौ।
तिनहीं के प्रताप प्रसन्न भये
सब संत सजातिनि साधु कियौ ॥
श्री वृन्दावन धाम हुते मन
काम सुजस लै नाम श्रवन पियौ।
करि ग्यान निदान सुजान सही
श्री बिहारी बिहारिनिदास हियौ ॥
हौं पढ्यौ न गुन्यौ न सुन्यौ न कछु
मौकों श्री हरिदास कृपा के दियौ ॥

पूज्यपाद श्री विश्वेश्वरदास जी महाराज की
मंगल-बधाई (दादरा)
जै जै श्री रसिकविश्वेश्वर स्वामी ।
रहैं अविरोध, दम्पति सुख शोध,
सु वाणी बोध, प्रचारक नामी ।।
करि सत्संग, भरे उर रंग,
वासना भंग, सुधरे कूर कामी ।
श्री वृन्दावन ठाम, ललित वर नाम,
केलि कल दाम, अनन्य अनुगामी ।।
जमुन अस्नान, जमुन जल पान,
जुगल रस गान, निकुंज विश्रामी ।
श्यामदास बल कृपा आस,
वर कंठ स्वांस रमै रज धामी ।।

मुखिया श्री छबीलीशरण जी महाराज की
मंगल-बधाई (दादरा)
जै जै छबीली छाँह में छबीली मुखिया ।
नित्य निरन्तर नित्य उपासक,
देय समुझाय समझि रुखिया ।।
जगत उदास आस हरिदासी,
टारे दुख जानि जन दुखिया ।
श्यामदास रसिकन कौ चेरौ,
रस बरसाय कियौ मन सुखिया ।।

पूज श्री जुगल गुरु जी की मंगल-बधाई
(आसावरी/पीलु)
जै : मिल जुल के गावैं री आजु बधाई ।
रहैं भावरूप सुचि सौंज सजाके,
झूमैं री नाँचैं मोद बढाई ॥ 1 ॥
कनि वीना, झांझ, मृदंग बजाबै,
उमगि उमगि आनन्द सरसाई
श्री : श्री गुरु नाम-रूप अचवावत,
कुँवर किशोरी हिय हरषाई ॥ 2 ॥
जमु दियो बनवास श्री स्वामी हरिदास,
(श्री) बिहारिनदासता अति सुखदाई
श्या कुंजमहल ते (श्री) विश्वेश-छबीली,
रीझि सु रीझि पुहुप बरसाई ॥ 3 ॥